लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेखापरीक्षा अर्चना

संयुक्तांक - 13-14 वर्ष - 2021

अवधिः जनवरी-2020 से दिसम्बर-2020

कार्यालय महालेखाकार

(लेखापरीक्षा-I)

राजस्थान, जयपुर

पश्चिमी क्षेत्र आई.ए.एण्ड ए.ड़ी. फुटबाल प्रतियोगिता का आनन्द लेते हुए कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारीगण

खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त करते हुए प्रधान महालेखाकार एवं महालेखाकार महोदय

लेखापरीक्षा अर्चना

कार्यालय महालेखाकार

(लेखापरीक्षा-I) राजस्थान, जयपुर

की हिन्दी अर्द्धवार्षिक पत्रिका

संरक्षक

श्री अनादि मिश्र

महालेखाकार

(लेखापरीक्षा-I) राजस्थान

परामर्शदाता

श्रीमती मीना बिष्ट

वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन

सम्पादक मण्डल

प्रबन्ध सम्पादक

श्री मनीष शर्मा

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

सम्पादक

श्री वीरेन्द्र सिंह

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सहायक सम्पादक

श्री सत्यबीर सिंह

कनिष्ठ अनुवादक

श्री जगदीश प्रसाद

लेखापरीक्षक

www.agraj.cag.gov.in

आवरण पृष्ठः कोरोना काल में जयपुर स्थित हवामहल को भी मास्क पहना कर आमजन को मास्क के महत्व के बारे में बताया गया।

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश

यह बहुत ही हर्ष की बात है कि हम अपनी विभागीय राजभाषा पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" का 13-14वां संयुक्तांक प्रकाशित कर रहे हैं। भारतीय संविधान द्वारा राजभाषा के रूप में मान्यता प्राप्त हिंदी के प्रति हम सभी का यह दायित्व है कि कार्यालयीन कार्यों में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करने के साथ ही इसके प्रचार-प्रसार में भी पूर्ण सहयोग प्रदान करें। इसके लिए हमें सहज, सरल एवं प्रचलित शब्दों को उपयोग में लेना चाहिए जिससे सभी भारतीयों तक राजभाषा की पहुँच बन सके।

लेखापरीक्षा अर्चना इस प्रयोजन की सिद्धि हेतु एक सशक्त माध्यम है। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल, सभी रचनाकारों एवं पाठकों को बधाई देते हुए मैं इस पत्रिका के उज्जवल भविष्य एवं उत्तरोतर प्रगति की कामना करता हूँ।

पत्रिका की सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

(अनादि मिश्र)
महालेखाकार

सम्पादकीय

हमारी विभागीय पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" का नवीन 13-14वां संयुक्तांक सुधी पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष एवं गर्व का अनुभव हो रहा है। विश्वव्यापी महामारी कोरोना के कारण 13वें अंक का प्रकाशन गत छः माही में किया जाना सम्भव नहीं हुआ। अतः संयुक्तांक 13-14 का प्रकाशन किया जा रहा है। भारत में हिंदी का प्रयोग आम बोलचाल की भाषा में सर्वाधिक रूप से किया जाता है तथा सामान्य लोगों के बीच में इसके अधिकाधिक प्रयोग से यह सम्पर्क भाषा के रूप में उभरी है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए हमें न केवल कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का प्रयोग करना चाहिए अपितु इससे इतर थके हारे मन मस्तिष्क को तरोताजा करने के लिए इसके रचनात्मक पहलुओं पर भी ध्यान देना चाहिए।

कार्यालय स्तर पर प्रकाशित की जाने वाली हिंदी पत्रिकाएं कार्यालय कर्मियों को एक ऐसा मंच उपलब्ध करवाती है जो न केवल उनकी सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए अवसर प्रदान करता है बल्कि राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को प्रोत्साहन भी प्रदान करता है। हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन निश्चित रूप से राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने की दिशा में एक सार्थक प्रयास है।

प्रस्तुत अंक में हमारे कार्यालय में वर्ष पर्यन्त होने वाली गतिविधियों एवं कार्यक्रमों की झलकियों के साथ साथ कार्मिकों द्वारा विभिन्न विषयों पर रचित लेख, कहानी एवं कविता इत्यादि का प्रकाशन किया जा रहा है। मैं इस पत्रिका में योगदान देने वाले सेवारत एवं सेवानिवृत्त कार्यालय कर्मियों तथा अतिथि रचनाकारों का आभार प्रकट करता हूँ जिनके सहयोग से पत्रिका इस स्तर तक पहुँच पायी है। आशा है कि अर्चना का यह अंक रोचक, ज्ञानवर्धक एवं सुधी पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। इसके साथ ही, पाठकवृन्द से अनुरोध करता हूँ कि वे पत्रिका की समीक्षा कर अपने बहुमूल्य सुझाव एवं प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत करावें जिससे हम आगामी अंकों को और रूचिकर एवं उपयोगी बना सकें।

वीरेन्द्र सिंह

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	रचना	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	ई-ऑफिसः एक संक्षिप्त परिचय	आलेख	श्री उपेन्द्र सिंह राठौड	05
2.	प्रयत्न	कविता	श्री विक्रम भारती	09
3.	सहानुभूति	कहानी	श्री भूपेन्द्र कुमार विमलानी	10
4.	आहिस्ता चल जिन्दगी	कविता	सुश्री सुमित्रा	11
5.	पावनी धरा सहे	कविता	डॉ एन के सेठी	11
6.	बुजुर्ग धरोहर हैं बोझ नहीं	आलेख	श्री पी सी गाँधी	12
7.	श्री रामोपनिषद	कविता	श्री तुलसी राम धाकड़	17
8.	प्रकृति - एक उपहार	आलेख	श्री अनुराग ओझा	18
9.	निज मन की व्यथा	आलेख	श्री संदीप साहनी	20
10.	बेटी का सम्मान	कविता	श्री नागर मल यादव	25
11.	नारायणी बाई	कहानी	श्री सुरेश चन्द मित्तल	26
12.	कल्पना	कविता	सुश्री मीनाक्षी भारती	30
13.	चार लाईनें	कविता	श्री रवि शंकर विजय	31
14.	गीत गोविन्द के रचयिता - श्री जयदेव जी	आलेख	श्री बनवारी लाल सोनी	33
15.	याद के बादल	कविता	श्री सोहित शर्मा	36
16.	गीत	कविता	श्री बिशन लाल अनुज	37
17.	काम की ई-एप्लीकेशन	आलेख	शिवपाली खण्डेलवाल	38
18.	कोरोनाः रेस अभी बाकी है	आलेख	श्री मनीष शर्मा	39
19.	दिवास्वप्न	कहानी	श्री देव शर्मा	40
20.	सपने एवं हकीकत	कविता	श्री राव जितेन्द्र प्रसाद	41
21.	कार्यालयीन गतिविधियां	प्रतिवेदन	श्री कमलेश कुमार रावत	43
22.	पाठकों के अभिमत	प्रतिक्रिया	पाठकवृन्द	45
23.	लेखापरीक्षा शब्दावली	शब्दावली	राजभाषा अनुभाग	47
24.	हे कृष्ण ! पुनः अवतार धरो	कविता	श्री डॉ एन के सेठी	48

(पत्रिका में प्रकाशित विचार रचनाकारों के अपने हैं एवं इसके लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।)

ई-ऑफिसः एक संक्षिप्त परिचय

ई-ऑफिस, सभी सरकारी कार्यालयों में सरलीकृत, उत्तरदायी, प्रभावी और पारदर्शी कार्य को प्राप्त करने के उद्देश्य से भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अधीन कार्यरत राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (एन.आई.सी.) कार्यालय द्वारा तैयार किया गया है।

यह ई-ऑफिस सॉफ्टवेयर खुली प्रौद्योगिकी और वेब-आधारित है जो उपयोगकर्ता के अनुकूल और उपयोग में आसान है। यह कार्यालय में एन.आई.सी. नेटवर्क पर कार्य करता है और कार्यालय के बाहर एन.आई.सी. वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क के माध्यम से कार्य करता है। उपयोगकर्ता आवश्यक प्रमाणीकरण के बाद इंटरनेट ब्राउज़र का उपयोग करके सॉफ्टवेयर तक पहुंच सकता है।

ई-ऑफिस के कई घटक है। उनमें से प्रमुख है- **फ़ाइल प्रबंधन प्रणाली**

फ़ाइल प्रबंधन प्रणाली की मुख्य विशेषताएं निम्न प्रकार से हैः-

- वर्कफ़्लो आधारित प्रणाली
- कुशल, पारदर्शी, जवाबदेह
- प्राप्तियां, नोटिंग, ड्राफ्ट, प्रेषण जैसे घटक
- रिकॉर्ड रखना और संचार को ट्रैक करना
- यह समय और पैसे बचाता है।
- छेड़छाड़ का सबूत रखता है।
- ड्राफ्ट संस्करण बनाए रखता है।
- डाक / ईमेल के माध्यम से पत्र को भेजने की सुविधा।
- फ़ाइल / रसीद किसी अन्य फ़ाइल / रसीद के साथ संलग्न की जा सकती है।
- एक फाइल को दूसरी फाइल के साथ भी जोड़ा जा सकता है ।

अनुभाग में प्राप्त होने वाले किसी भी प्रकार के दस्तावेज/पत्र इत्यादि को ई-ऑफिस के द्वारा अपने उच्चाधिकारियों तक प्रस्तुत करने की प्रक्रिया निम्न प्रकार से हैः-

प्राप्तियां

प्राप्तियां एक लिखित दस्तावेज है जिसके लिए एक निर्दिष्ट इकाई को एक विनिमय के रूप में प्राप्त किया गया है | ई-फाइल में अनुभागों द्वारा उच्च प्राधिकारी से संसाधित और अनुमोदित प्राप्तियां बनाई जाती हैं, जिसे फाइल के साथ जोड़ा जाता है।

प्राप्तियां के तहत निम्नानुसार कई लिंक उपलब्ध हैं:-

ब्राउज़ और डायरीज़

क. इलेक्ट्रोनिक: इलेक्ट्रॉनिक मॉड्यूल में स्कैन किए गए दस्तावेज़ का ब्राउज़िंग या अपलोडिंग अनिवार्य है

और फिर स्कैन किए गए पत्राचार को अपलोड किया जाता है। इसमे 20 MB तक की फाइल को अपलोड किया जा सकता है |

ख. भौतिक : फिजिकल मॉड्यूल में स्कैन किए गए डॉक्यूमेंट का ब्राउजिंग या अपलोडिंग अनिवार्य नहीं है, केवल प्राप्त पत्राचार का डायरिजेशन, ट्रैकिंग उद्देश्य के लिए किया जाता है।

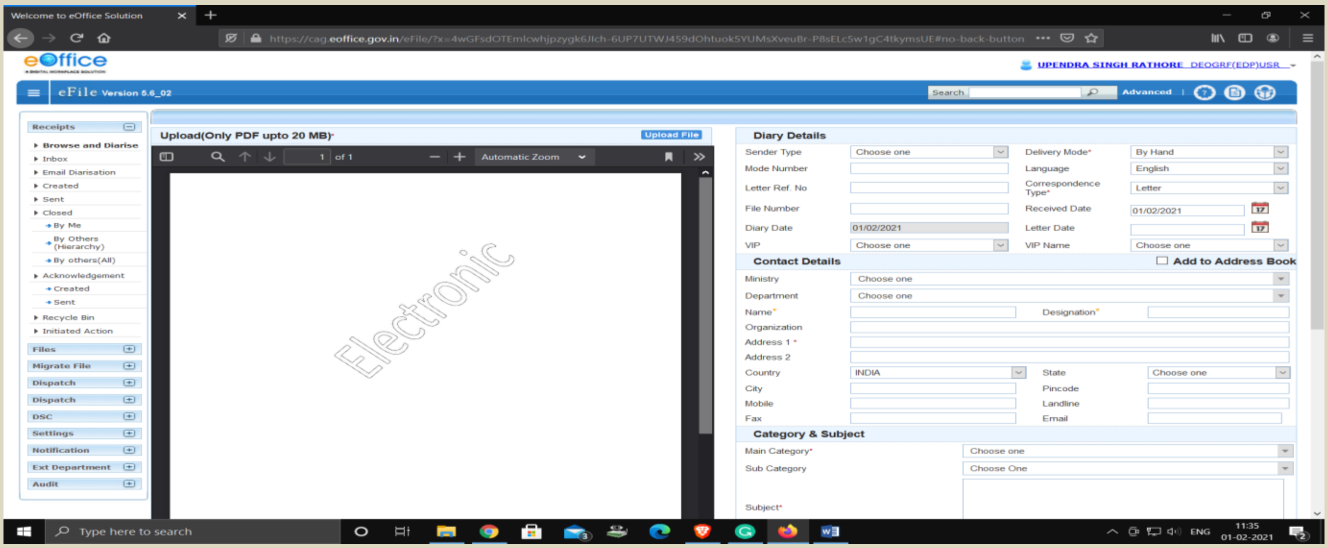

<u>इनबॉक्स:-</u>

<u>ईमेल डायरिज़ेशन</u>: ईमेल डायरिज़ेशन के दौरान, ईमेल को एन.आई.सी. ईमेल से ई-फाइल पर भेजा जाता है। उपयोगकर्ता को एनआईसी ईमेल इनबॉक्स से ईमेल का चयन करना चाहिए और विकल्प 'मूव टू फाइल' का उपयोग करना होता है।

<u>फाइल बनाना:-</u>

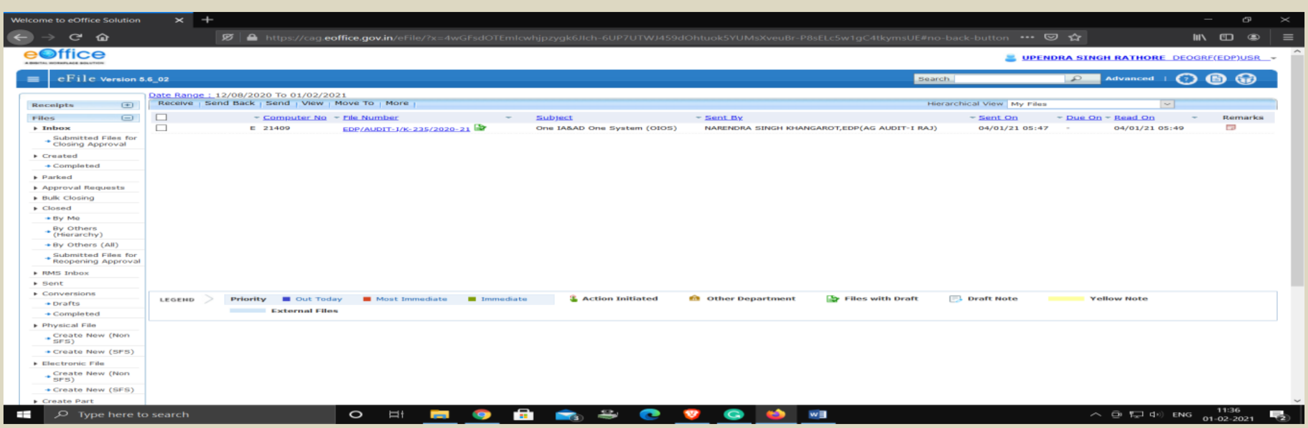

इस मेनू में कई विकल्प है जिससे नई फाइल निम्न प्रकार से बनाई जाती है :

फाइल बनाने के दो तरीके हैं जिसमें से हमें इलेक्ट्रॉनिक फाइल में उप मेनू क्रिएट न्यू एसएफएस को चुनना होता है और फाइल को कार्यालय में प्रचलित प्रणालीनुसार फाइल संख्या देनी होती है। एक बार फाइल बनने के बाद उस फाइल को डिलीट नहीं किया जा सकता है।

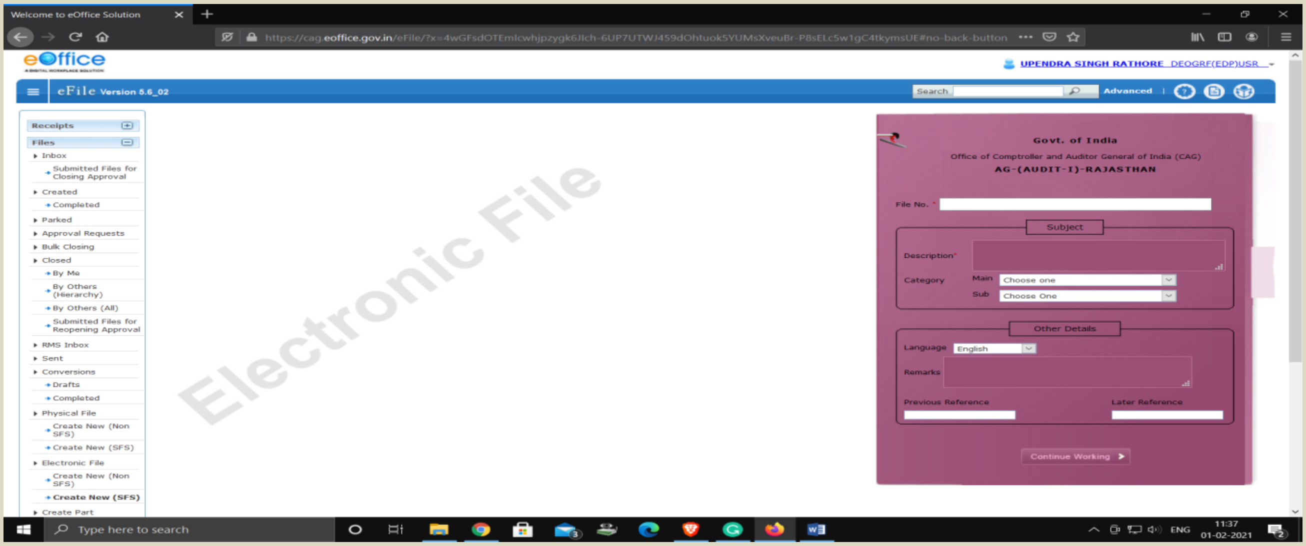

फाइल खोलने के बाद ऐड ग्रीन नोट को क्लिक करके नोटशीट लिखी जा सकती है। दाईं ओर पत्राचार वाली जगह में आवश्यक प्राप्तियों को, जो की पहले से ई-ऑफिस में है, को लगाया जा सकता है।

मसौदा बनानाः-

क्रिएट न्यू ड्राफ्ट को क्लिक करके ड्राफ्ट बनाया जा सकता है। ड्राफ्ट स्पेस में या तो सीधे ही लिख सकते हैं या फाइल को अपलोड कर सकते हैं अथवा उपलब्ध ड्राफ्ट से कॉपी कर यहाँ पेस्ट कर सकते हैं। ड्राफ्ट अनुमोदन होने के पश्चात अंत में किसके पास जाएगा उसका नाम, पता, ईमेल आदि लिख दिये जाने चाहिए। ड्राफ्ट को सेव करना आवश्यक है।

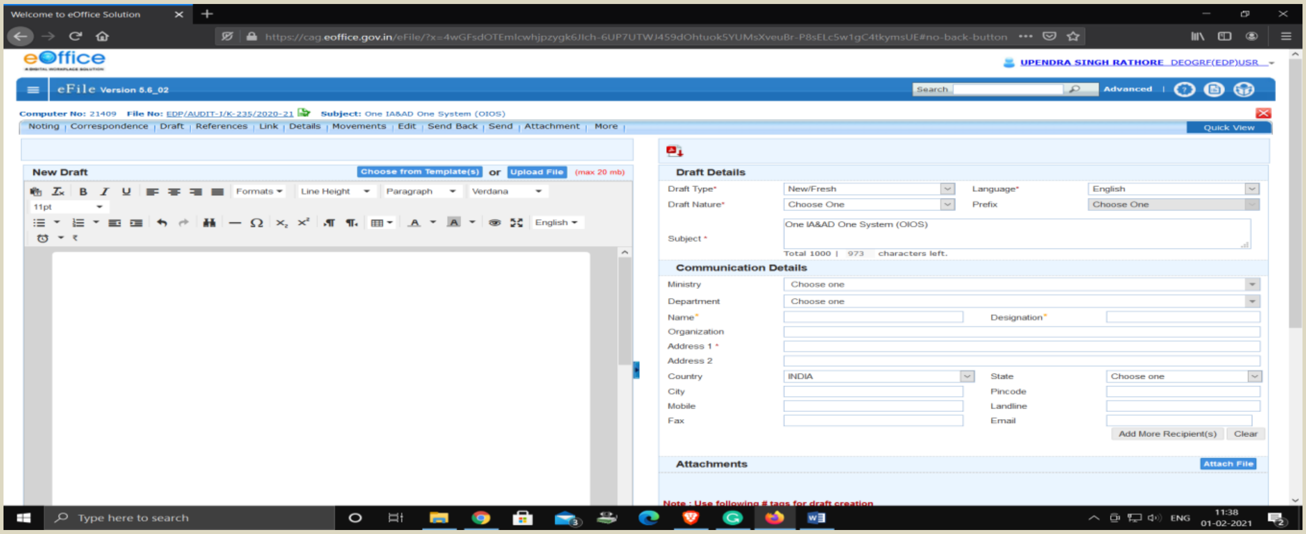

ड्राफ्ट को सेव करने के पश्चात अनुमोदन के लिए उच्च अधिकारी को सेंड आप्शन के माध्यम से भेजा जा सकता है। ड्राफ्ट को अनुमोदन से पहले कितनी बार भी अद्यतन किया जा सकता है, लेकिन एक बार अनुमोदन होने के पश्चात् उसे अद्यतन नहीं किया जा सकता है।

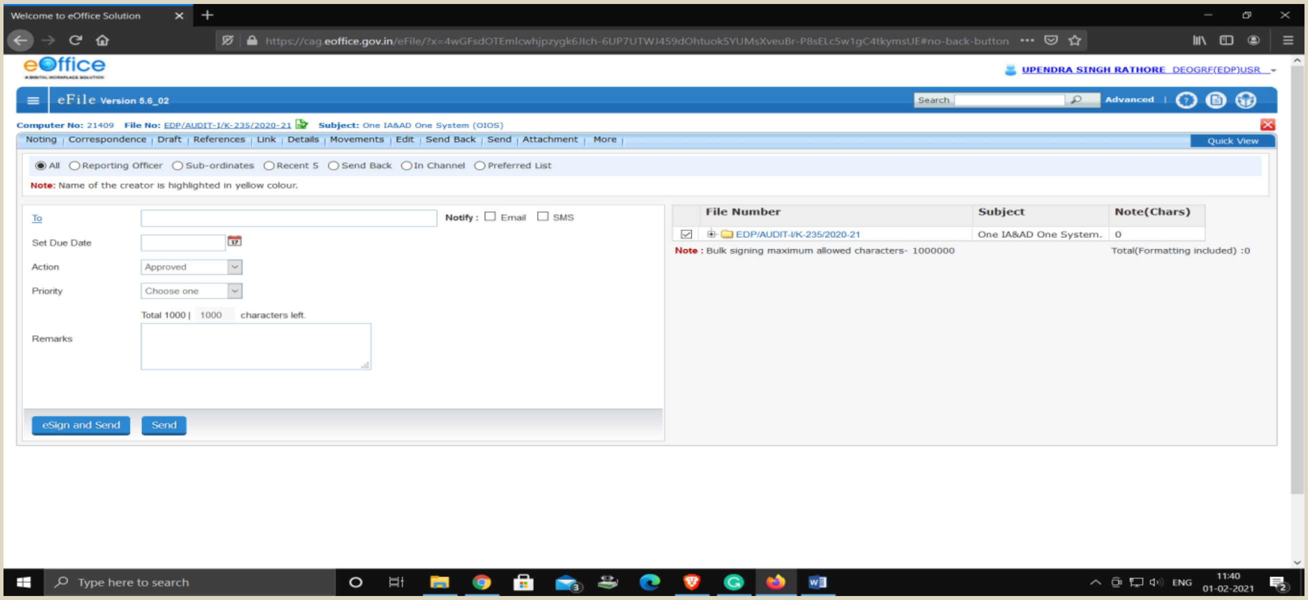

ड्राफ्ट के अनुमोदन के पश्चात ड्राफ्ट को डिस्पैच करना आवश्यक है (डिस्पैच बाई सेल्फ)।

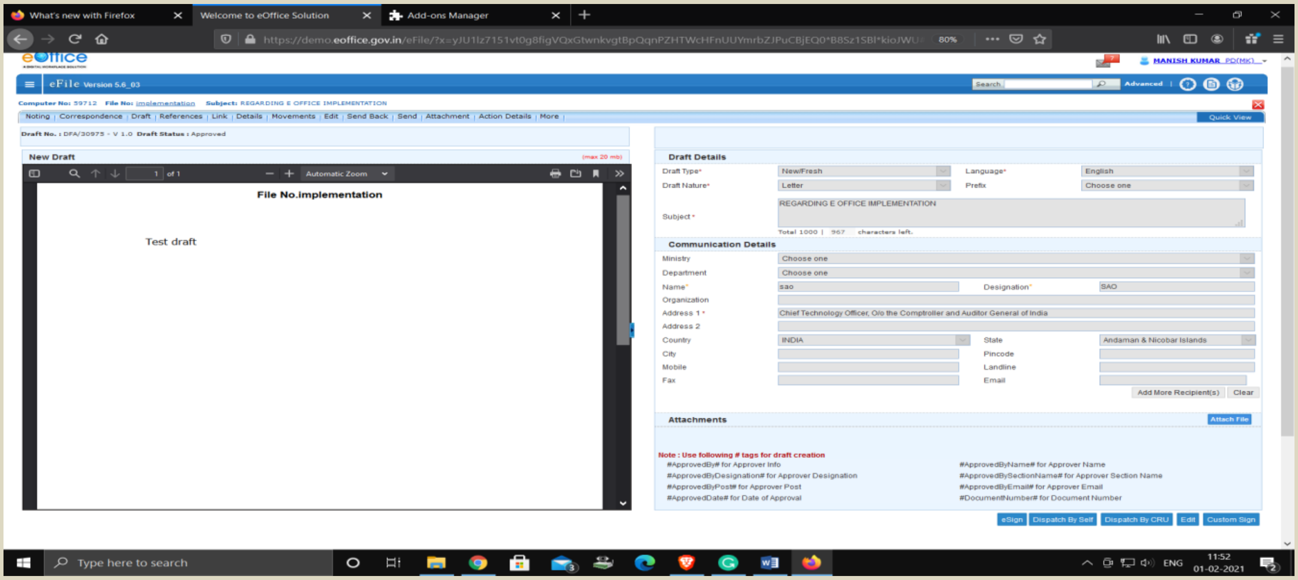

इस प्रकार ई-ऑफिस के माध्यम से कार्य पूर्ण करते हैं।

उपेन्द्र सिंह राठौड़
वरि. डाटा प्रोसेसर

प्रयत्न

माना है मुश्किल यह डगर

हम भी है मजबूत मगर,

संघर्ष कर जीवन की आंधी से

हमने चलते रहना सीखा है।

हम उस दीपक की लौ नहीं

जो एक झोंके में बुझ जाएं,

हम उस जंगल की ज्वाला हैं

जिसने आंधी में जलना सीखा है।

निशा आगमन पर निराश क्यों ?

कि निश्चित है अब प्रभात !

परिवर्तन प्रकृति की नियति है

इस सत्य को हमने सीखा है ।

माना कि पथ आसान नहीं

हमको मंजूर पर हार नहीं,

लड़खड़ाकर के ही सही, हमने चलना सीखा है

हाँ, गिर कर ही उठना सीखा है ।

दिवा - निशा के यत्नों में

सहस्त्र - शूल प्राप्त मुझे,

पर हार नहीं स्वीकार मुझे......

विक्रम भारती

एम.टी.एस.

सहानुभूति

अपने हाथ में रखी कोविड-19 की रिपोर्ट को देखते हुए रामेश्वर जी बहुत ही परेशान एवं व्याकुल लग रहे थे। पूछने पर ज्ञात हुआ कि जांच में वे कोविड-19 पॉजिटिव पाए गए थे। खुद की सेहत को नजरंदाज करते हुए उन्हें भय था तो सिर्फ अपने चार वर्ष के बेटे का एवं परिवार मे शामिल उनकी बूढ़ी माता एवं पिता जी के स्वास्थ्य का। एक बार के लिए तो उनका दिमाग सुन्न पड गया था। आँखो के आगे बार-बार अन्धेरा छा रहा था। काफी हिम्मत जुटा कर उन्होंने अपनी रिपोर्ट अपने कार्यालय को भेजते हुए अपने अधिकारियों को स्थिति से अवगत करवाया। इस सम्बन्ध में सरकारी दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए उन्होंने तुरन्त ही सभी से दूरी बना ली थी परन्तु एक बात जो उन्हें लगातार परेशान कर रही थी वो यह कि पूरी तरह सावधानी बरतने पर एवं मुंह पर मास्क लगाने से लेकर उचित दूरी बनाए रखने तक के उनके सभी प्रयासों के उपरान्त भी उनको इस वायरस ने अपनी चपेट में किस तरह से ले लिया।

कार्यालय में आज का विषय सिर्फ एवं सिर्फ रामेश्वर जी का कोविड-19 पॉजिटिव पाया जाना था। सभी को रामेश्वर जी के साथ सहानुभूति थी। रामेश्वर जी की व्यवहार कुशलता अचानक से सभी को नजर आने लगी थी।

सरकारी दिशा - निर्देशों के अनुसार रामेश्वर जी को 14 दिन के लिए एकान्तवास में डाल दिया गया था। परिवार के सभी सदस्यों का भी कोविड-19 का परीक्षण किया जा चुका था। परिवार की रिपोर्ट आने में 2 दिन का समय लगा। यह 2 दिन रामेश्वर जी के जीवन के सबसे लम्बे दिन थे। 2 दिन के बाद रिपोर्ट आने पर रामेश्वर जी की माताजी भी, जो कि ह्रदय रोग से ग्रसित थी, कोविड-19 पॉजिटिव पाई गई। रामेश्वर जी का दिल इस सूचना से बैठ गया था। उनकी माताजी को तुरन्त ही अस्पताल मे भर्ती करवाया गया। कोविड-19 से दस दिन तक जंग करने के बाद आखिरकार रामेश्वर जी की माता जी के प्राण पखेरू उड़ गए। रामेश्वर जी, जो कि चार दिन में ही पूर्णत: स्वस्थ होकर घर लौट चुके थे, इस घटना से आहत थे एवं सोच रहे थे कि अचानक उनकी जिन्दगी में यह भूचाल कैसे आ गया। उनके मन में विचारों की उथल-पुथल चल रही थी। वे यह सोच रहे थे कि काश लॉकडाउन (भारत बन्द) का पालन पूर्णतः एवं उचित तरीके से किया गया होता तो आज देश के हालात ऐसे नहीं होते ।

खैर, रामेश्वर जी की दुनिया में भूचाल आ चुका था। उनका परिवार जो कि सम्पूर्णता की परिभाषा पर खरा उतरता था, आज अधूरा हो चुका था। उनकी माता जी का पार्थिव शरीर भी उन्हें नहीं सौंपा गया। उनका परिवार उनकी माता के अन्तिम दर्शन को भी तरस गया । परन्तु उनके कार्यालय से लेकर उनकी आवासीय कॉलोनी तक सभी को उनके साथ पूर्णत: सहनुभूति थी। सिर्फ और सिर्फ सहानुभूति।

भूपेन्द्र कुमार विमलानी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

आहिस्ता चल जिन्दगी

आहिस्ता चल जिन्दगी अभी
कुछ कर्ज चुकाना बाकी है।
कुछ दर्द मिटाना बाकी है
कुछ फर्ज निभाना बाकी है ।।
रफ्तार में तेरे चलने से
कुछ रूठ गए, कुछ छूट गए।
रूठों को मनाना बाकी है
रातों को मनाना बाकी है ।।
कुछ रिश्ते बनकर टूट गए,
कुछ जुड़ते-जुड़ते छूट गए।
उन टूटे छूटे रिश्तों के
जख्मों को मिटाना बाकी है ।।
कुछ हसरतें अभी अधूरी हैं
कुछ काम भी और जरूरी है।
जीवन की उलझी पहेली को
पूरा सुलझाना बाकी है ।।
आहिस्ता चल जिन्दगी अभी
कुछ कर्ज चुकाना बाकी है
कुछ फर्ज निभाना बाकी है ।।
कुछ दर्द मिटाना बाकी है

सुमित्रा
एम.टी.एस.

पावनी धरा सहे

पावनी धरा सहे, मानवी विकार को
सभी स्वार्थी बने, भूल के दुलार को।
मात है धरा यही, पालती सदैव ही
आरती करें सभी, भूमि भू धरा मही।
अन्न वित्त धारती, सृष्टि का भला करे
प्यार और नेह ही, भारती सदा करे।
वृक्ष खूब ही लगे, हो धरा हरी भरी
गन्दगी करें नहीं, प्राण वायु हो खरी।
जिन्दगी सुशांत हो, त्याग भावना रहे
स्वार्थी बने नहीं, स्वच्छता यहाँ रहे।
नीर होय निर्मला, भूमि वायु शुद्ध हो
पूर्ण हो तडाग भी, ना धरा अशुद्ध हो।
दोष शांत हो सभी, भूमि ताप ना बढ़े
एक हो सभी मिले, ताप पाप से लड़ें।

डॉ एन के सेठी
अतिथि रचनाकार

बुजुर्ग धरोहर हैं, बोझ नहीं

भारत में बुजुर्गों के सम्मान की परम्परा रही है और हम इस बात पर गर्व करते रहे हैं कि हमारे देश में नई पीढ़ी पुरानी पीढ़ी की उपेक्षा नहीं करती बल्कि उन्हें पूरा सम्मान देती है और उनके अनुभवों की कद्र भी करती है। लेकिन बढ़ते बाह्य प्रभावों, ध्रुवीकरण, उदार अर्थव्यवस्था एवं पाश्चात्य प्रभाव ने आम आदमी की जिन्दगी को तेज बना दिया है। स्पर्धा के दौर में व्यक्ति तरक्की के फेर में बहुत कुछ भूलता जा रहा है। रिश्तों को सीमित कर रहा है। हमारे बुजुर्ग अपनी सूझबूझ एवं समझ तथा तजुर्बों से युवा पीढ़ी एवं घर परिवार को सार्थक दिशा देने वाले होते हैं लेकिन आज व्यक्ति अपने आप में इतना खो गया है कि उसे अपने बुजुर्गों से मार्ग दर्शन प्राप्त करने का समय ही नहीं है। हमें गर्व है कि आज भारत की युवा पीढ़ी पर भारत की कुल जनसंख्या की 10 प्रतिशत आबादी पर 60 वर्ष से उपर वाले बुजुर्गों की छांव है जो वर्ष 2026 में 16 करोड़ तक हो जायेगी। भारत में रोजाना लगभग 17 हजार नये लोग 60 वर्ष के होकर जुड़ जाते हैं। ऐसे बुजुर्गों का अनुभव, संरक्षण हमारे लिए छत्र छाया का कार्य करता है लेकिन विडम्बना यह है कि आज हमारे बुजुर्गों की परिवार एवं समाज में उपेक्षा एवं तिरस्कार की घटनाएं दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। इतना ही नहीं, आज बुजुर्ग अपने ही परिवारजनों में बेगाने की जिन्दगी जी रहे हैं।

युवा पीढ़ी जो अपने को व्यस्त मान रही है, जो बुजुर्गों से वैचारिक मतभेद ही नहीं वरन् हर प्रकार की दूरियां रखती है, उन्हें सोचने की जरूरत है क्योंकि कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है। यदि परिजन, इन बुजुर्गों को थोड़ा सम्मान, थोड़ा प्यार, थोड़ा अपनापन तथा थोड़ा समय निकाल

कर इनको दे दें तो ये बुजुर्ग परिजनों को वो तोहफा दे सकते हैं जो कभी वे पैसे के बल पर नहीं खरीद सकते। बस थोडा सा त्याग करने की आवश्यकता है। बुजुर्ग हमारे लिए अति महत्वपूर्ण एवं उपयोगी हैं, उन्हें निम्नानुसार समझेः-

1. बुजुर्ग हमारी संस्कृति के अभिन्न अंग हैंः- हमारी संस्कृति एवं पारस्परिक गति-विधियों की रक्षा इन बुजुर्गों के द्वारा ही होती है। खानदान एवं ठिकाने की पहचान इन बुजुर्गों से होती है। जो गुडविल या ख्याति हमारे बुजुर्गों ने अभाव की जिन्दगी में रह कर कमाई है, वह गुडविल आज हम लाखों रूपये कमा कर भी प्राप्त नहीं कर सकते हैं। जो रिश्ते यह घर बैठे बना लेते थे वे रिश्ते हम आज मीडिया, इलैक्ट्रॉनिक उपकरण या घूम-घूम कर भी नहीं बना सकते हैं। जितनी विश्वसनीयता इन लोगों की थी आज हमारी नहीं है। आज परिवार की नींव खोखली होने का कारण यही है कि हम हमारी संस्कृति को भूल गये हैं। परिवार की नींव मजबूत करने और बच्चों को रिश्तों की गम्भीरता व उनका सम्मान सिखाने के लिए घर के बुजुर्गों के साथ समय बिताना जरूरी है। उनकी उपेक्षा के बजाय उन्हें सम्मान देवें और उनके संरक्षण की छाँव में रहें तो निश्चित रूप से आप तनाव रहित रहेंगे। उनकी अवहेलना का अर्थ है- जीवन के लिए उपयोगी ज्ञान व अनुभवों की अवहेलना। युवा इस बात को सदैव याद रखें कि एक दिन आप भी इस अवस्था को प्राप्त करेंगे और आपके बच्चे आपसे आगे ही होंगे। यदि आज के युवा इस बात को समझ लें तो उनका घर स्वर्ग बन जायेगा क्योंकि सच्चे अर्थों में बुजुर्ग ही हमारी संस्कृति के रखवाले हैं। यदि बुजुर्गों के साथ बच्चे रहते हैं तो वे अपनी परम्पराओं और संस्कृति के साथ सहजता से जुड़ जाते हैं और उन्हें इसके लिए अलग से कोई प्रयास नहीं करना पडता है।
2. बुजुर्गों की गोद उर्वरक भूमि की तरहः- आज की भागमभाग जिन्दगी में तथा खास तौर पर उन परिवारों में जहां पति पत्नी दोनों सेवारत हों, वहां पर बच्चों की देखभाल करने के लिए आया या क्रेच का सहारा लेना पड़ता है क्योंकि ऐसे अभिभावक अपने बुजुर्गों को बोझ मानकर उनसे अलग रहते हैं लेकिन वे यह भूल जाते हैं कि घर के बुजुर्ग की गोद तो उर्वरक भूमि से ज्यादा उपजाऊ है जहां पर बच्चों के संस्कार पल्लवित होते हैं। घर की सुरक्षा के साथ बच्चों की भी सुरक्षा होती है तथा उनका मानसिक विकास तीव्रगति से होता है क्योंकि ये रिश्तों के बीच में एक पुल का काम करते हैं।

   बुजुर्ग तो अपने अनुभवों के चलते फिरते पुस्तकालय होते हैं। वे बच्चों को रोमांचक, ज्ञानवर्धक एवं रोचक संस्मरण तथा कहानियां सुनाकर, पौराणिक बातें एवं परम्परागत रीति-रिवाज बताकर उन्हें ताजा एवं तर रखते हैं। जुग-जुग जिओ तथा नाना प्रकार के आशिर्वाद के सिंचन से बचपन को मजबूत करते हैं जिससे बचपन बखूबी पनप सकता है। ऐसा बचपन सौभाग्यशाली है जिसे बुजुर्गों का समर्थ सम्बल मिलता है, जिसकी गोद में बच्चे सोते हैं। ऐसे व्यक्ति निश्चित रूप से जीवन पर्यन्त एक गहरी भावनात्मक सन्तुष्टि एवं ढ़ृढता लिए होंगे और जीवन की चुनौतियों का आसानी से सामना करने की स्थिति में भी होंगे।

3. बुजुर्ग बच्चों के विकास में सहायक:- घर में जितने भी बुजुर्ग होते हैं वे ज्यादातर पढ़े लिखे और अनुभवशील होते हैं। उनकी योग्यता बच्चों की मानसिकता पर अच्छा प्रभाव डालती है। वे सरल तरीके से उन्हें पढ़ा सकते हैं, होमवर्क करा सकते हैं, उनके साथ खेल सकते हैं, गार्डन में ले जा सकते हैं। इतना ही नहीं, कहते हैं कि मूल से ब्याज प्यारा होता है। दादा-पोता की जोड़ी तो दोस्ती की तरह होती है क्योंकि माता-पिता के समयाभाव के कारण या उनके डर के कारण बच्चे सारी बातें दादा के साथ आसानी से शेयर करते हैं तथा दादा उनकी सभी समस्याओं का निराकरण कर देते हैं। कठिन से कठिन बात का हल आसानी से समझा देते हैं। बुजुर्ग उनकी कोमल मानसिकता के कायल होते हैं। उन्हे डाँटते भी हैं तो प्यार से। ये सभी बातें बच्चों की मानसिकता पर बच्चों के प्रारम्भिक जीवन मे बुजुर्गो का साथ उनके भावी जीवन की नींव रखने में अपना उल्लेखनीय योगदान दे सकते हैं। बच्चों की शिक्षा एवं संस्कार में उनका अनुकरणीय योगदान रहता है जो लोग बुजुर्गों का सम्मान नहीं करते, उन्हें अलग रखते हैं वे इस सुख का अनुभव भी नहीं कर सकते। यदि वे ऐसा करते हैं, उन्हें साथ रखते हैं तो उन्हे गहरी सन्तुष्टि एवं शान्ति मिलेगी और साथ ही जीवन की आपा- धापी में खोए तनावग्रस्त माता-पिता के लिए भी वे एक बहुत बडा संबल साबित होंगे।
4. अनुभव की पाठशाला:- जो व्यक्ति या युवा माता-पिता अपने बुजुर्गों का तिरस्कार करते हैं, उन्हें नकारते हैं वे सहजता के लाभ से वंचित रह जाते हैं। उनको कुंठा एवं घुटन के अलावा कुछ भी प्राप्त नहीं होता है। वे अशान्त तो होते ही हैं साथ में अपनी स्वयं की समस्याओं से ग्रस्त रहते हैं तथा उनका समाधान भी वे नहीं निकाल पाते। बाल ऐसे ही सफेद नहीं होते हैं बड़ा तपना पड़ता है, जीवन में संघर्ष के साथ जीवन यापन करने वाले बुजुर्ग चौपाल पर समस्याओं का हल निकालते हुए पंचायत के बड़े-बड़े फैसले आसानी से कर लेते हैं। उनका अनुभव इतना परिपक्व होता है कि कैसी भी समस्या हो, बड़े धैर्य के साथ उसका समाधान एवं तोड़ निकाल लेते हैं जबकि आज के युवा जल्दबाजी में तथा हाजिर परिणाम के फेर में समस्या को और उलझा देते हैं। यदि ऐसे माता-पिता अपने बुजुर्गों की छत्र छाया में रहें तो उन्हें कोई समस्या नहीं आयेगी क्योंकि संभालने के लिए बुजुर्ग हैं। यदि आ भी गई तो उसका समाधान वे आसानी से निकाल कर समस्या को हल कर देते हैं।
5. परिवार के कुशल मार्गदर्शक:- घर के बुजुर्ग अपने अनुभवों के आधार पर परिवार के कुशल मार्गदर्शक भी सिद्ध होते हैं। युवा पीढ़ी को भले ही बुजुर्ग नये जमाने के अनुसार ठीक नहीं लगते हों लेकिन यह सच है कि जब युवा पटरी से उतर जाता है तो उन्हें लाइन पर लाने का कार्य ये आसानी से कर लेते हैं बशर्ते कि उनका सम्मान हो, उनकी बात को समझने वाला हो क्योंकि

समय के थपेड़ों के बीच टूटते बिखरते परिवारों को प्रेम से जोड़ने का कार्य ये सहजता से सम्पन्न कर सकते हैं। अच्छी बुरी बात, गुण-अवगुण की परख तथा अपने स्वयं के लम्बे अनुभव से बुज़ुर्ग हर ऐंगल से परिवार के मार्गदर्शक बन सकते हैं।

बुज़ुर्ग घर परिवार की मुख्य धुरी होते हैं, घर की रीढ़ होते हैं। हमें वे न केवल अपना आशीष व दुलार देते हैं बल्कि अपने जीवन के अनमोल अनुभव भी खोलकर लुटाते हैं जो कि मनुष्य के जीवन में बहुत सहायक होते हैं। वे हमारी झोली कई तरह के आशीर्वादों से भरते रहते हैं। जैसे- दूदो नहाओ पूतो फलो, फलो फूलो, दीर्घायु हो, इस प्रकार की दुआओं से व्यक्ति प्रफुल्लित रहता है।

6. विशाल वट वृक्ष की छांव:- आज हम भले ही भौतिकता की अंधी दौड़ में आगे निकल गये हों लेकिन रिश्तों की शालीनता में बहुत पिछड़ गये हैं। आदर, प्यार, कृतज्ञता, आज्ञाकारिता, समर्पण के धागे से बंधे रिश्ते जो हमारी विशेषता थी, आज तार-तार हो रहे हैं। हमारे समाज का मूल आधार हमारे मधुर रिश्ते रहे हैं लेकिन आज की तेज भागती जिन्दगी ने इन सभी को पीछे धकेल दिया है। पैसा बढ़ रहा है, जीवन स्तर बढ़ रहा है, संसाधन बढ़ रहे हैं, आलीशान मकान बढ़ रहे हैं लेकिन वट वृक्ष धराशाही हो रहा है। ये सभी संसाधन और इनका उपयोग वट वृक्ष की छांव में ही अच्छे लगते हैं। मनुष्य बहुत ताकतवर होता है, वह कितनी भी विपत्ति आ जाये अपने मन को मजबूत रखता है लेकिन बुज़ुर्ग ही ऐसी थाली है जिसके सामने कठोर से कठोर मनुष्य भी पिघल जाता है, फूट पड़ता है, रो पड़ता है और अपने बुज़ुर्ग के सामने यदि समर्पण भाव से बात बता देता है तो वह हल्का भी हो जाता है। क्योंकि धूप को सहने वाला बुज़ुर्ग घर में है तो परिजनों को शीतल छांव अवश्य मिलती है। यदि आपने वट वृक्ष को ही हटा दिया तो छांव के लिए भटकने के अतिरिक्त और कुछ भी शेष नहीं बचता। अतः अपनी विरासत को धराशायी न होने दो क्योंकि ये ही हमारे वट वृक्ष हैं जिनकी शीतल छांव में हम और हमारा परिवार पल्लवित होते हैं।

बूढ़ा पेड़ फल दे या ना दे पर वह छांव अवश्य देता है। इतना ही नहीं, इनकी जड़ें इतनी मजबूत होती हैं कि वे हर झंझावतों को झेल सकते हैं। अत: इनके ज्ञान के खजाने का हमें लाभ लेना है तो इन्हे अपने से दूर मत कीजिए। इनके साये में आप पूर्ण सुरक्षित हैं लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज बुज़ुर्ग सुरक्षा और संरक्षण के लिए भटकने को मजबूर हैं। तिरस्कार और परायापन उन्हें द्रवित कर रहा है।

7. बुज़ुर्ग हमारी धरोहर हैं:- हमारे बुज़ुर्ग हमारी धरोहर हैं, हमारी इज्जत हैं, इनका सम्मान करना तो हमारी संस्कृति है, हमारा नैतिक कर्तव्य है क्योंकि उपरोक्त सभी कारणों के साथ साथ इनसे समन्वय बनाकर हम लाभान्वित हो सकते हैं। इनके लम्बे अनुभवों से हम राष्ट्र की सांस्कृतिक दीवारों को मजबूत बना सकते हैं। खानदान और ठिकाने इन्ही के त्याग, समर्पण तथा संघर्षों की

सफलता पर टिके होते हैं जो आज धराशायी हो रहे हैं। यदि इनकी आप इज्जत करते हैं तो आपकी इज्जत में स्वत: ही चार चाँद लग जाते हैं। अत: इनके जीवन को संवारें। जिस प्रकार से हम कीमती सामानों की, एन्टीक वस्तुओं की, कांच के बर्तनों की हिफाजत करते हैं, ठीक उसी प्रकार हमारे बुजुर्ग हैं जिनकी देखभाल हम कर सकते हैं। लेकिन देखने में आता है कि आज ये नौकरों के सहारे या वृद्धाश्रम में अपना दयनीय जीवन व्यतीत कर रहे हैं, लाचारी की जिन्दगी जी रहे हैं। इन्हें हाशिये पर देखा जाता है। यह प्रश्न चिन्ह क्या आपके मन मस्तिष्क में नहीं उठता क्योंकि जिस लाड़ प्यार से आपको पाल-पोस कर योग्य बनाकर आपका परिवार बसाया, उसकी सजा क्या इन्हें अलग करना है ? नहीं। इन्होंने अपनी जवानी को आपके भविष्य के लिए दांव पर इसलिए लगा दिया क्योंकि आप का जीवन आरामदायक बने और आप कुछ बन सकें। लेकिन आपने तो अपनों को ही पराया कर दिया। आप यही सोचेंगे कि हम भी हमारे बच्चों के लिए वही कर रहे हैं जो हमारे बुजुर्गों ने हमारे लिए किया है। यह बात शतप्रतिशत सही है लेकिन आप यहां पर एक भूल कर रहे हैं। इन बुजुर्गों ने कभी अपने बुजुर्गों को अपने से अलग नहीं किया। सदैव अपने प्यार, सेवा, एवं श्रद्धा से उनके साथ निर्वाह किया लेकिन आप इस बात को नहीं सोचते। यदि नहीं तो, आपके लिए भी ऐसा ताना बाना बुनने वाले आपके ही नौनिहाल तैयार हो रहे हैं जिससे आपको भी वही दंश झेलना पड़ेगा। अत: वक्त के साथ संभलने में समझदारी है।

यह लेख बड़ा भावनात्मक है। मैं स्वयं लिखते लिखते भावुक हो गया हूँ। बस पाठकों से इतना ही निवेदन करता हूँ कि कभी अपने बुजुर्गों को पराया मत समझना, उन्हें तो सिर्फ सम्मान और प्यार चाहिए भले ही इसके लिए आपको अपनी स्वच्छन्दता छोड़नी पड़े। क्योंकि इतने सारे लाभों को देखते हुए आपकी स्वच्छन्दता नगण्य है, गौण है, उसका इतना अधिक महत्व नहीं है जितना इसको त्यागने में जो लाभ आपको प्राप्त होने वाले हैं। उन्हीं पर आपको फोकस करना है ताकि आप सुखमयी जीवन जी सकें एवं बुजुर्ग समृद्ध बन सकें।

पदम चन्द गाँधी

(से.नि.) वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री रामोपनिषद

प्रसंग- दृढ़ - संकल्प हमारा हो।

विशालकाय हाथी के तन से,
पक्षी कीड़े खाते हैं।
महा भयानक सिंह के मुख से,
माँस नोंच ले जाते हैं।
महा शक्तिशाली हाथी ज्यों,
क्रोधित विचलित नहीं होता है।
बलवान सिंह भी निश्चिन्तता से,
गहन नींद में सोता है।।
कोई पक्षी आतंक मचाकर,
अपनी औकात दिखाता है।
शक्तिमान की शक्ति भूलकर,
बरबस उसे जगाता है।।
फिर क्या होता हश्र, आप
सब अच्छी तरह जानते हैं।
शीघ्र नष्ट होता आंतकी,
ऐसा सभी मानते हैं।।
आतंकी जो निर्ममता से,
लोगों की हत्या करते हैं।
आतंकवाद का जहर घोलकर,
मानवता को ड़सते हैं।

आतंकवाद के विरूद्‌ध समूचा,
देश हमारा जग जाये।
इस कलंक का नामोनिशाँ
ही पुण्य धरा से मिट जाये।।
आतंकवाद का करें सफाया,
भारत की पावन भूमि से,
यही कामना है सब की,
आतंकवाद मिटे जड़ से।।
आतंकवाद को जो कोई,
फैलाता हो या बढ़ाता हो।
उसे नष्ट करना ही होगा,
दृढ़ - संकल्प हमारा हो।।
महा धनुर्धर श्री राम हैं,
महा यशस्वी हैं श्री राम।
विनय नहीं मानता उसको,
दण्डित करते हैं श्री राम।।
धर्मज्ञ -कृतज्ञ श्री राम हैं,
दृढ़ संकल्पवान श्री राम।
पृथ्वी के भार-हरण हेतु,
दृढ़- प्रतिज्ञ-सदा श्री राम।।

तुलसी राम धाकड
(से.नि.) वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रकृतिः एक उपहार

प्रकृति शब्द सुनते ही हमारे दिमाग में सुंदर झरने, बर्फ से ढके बड़े-बड़े पहाड़, शरद सुहावना मौसम, हसीन वादियाँ यही ख्याल आते हैं। जबकि प्रकृति में वे सभी वस्तुएँ शामिल हैं जो मानव निर्मित नहीं हैं अर्थात अपने आप उत्पन्न हुई हैं। प्रकृति में पहाड़, नदियाँ, मरुस्थल, सागर, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, जीव-जन्तु, सूर्य, चाँद-तारे आदि शामिल हैं। प्रकृति ने जो भी वस्तु बनाई है उसका अपना महत्व एवं उपयोगिता है। कुछ भी अनुपयोगी नहीं है तथा प्रकृति ने प्रत्येक वस्तु का उसके उपयोग एवं आवश्यकता के अनुसार उत्पादन एवं निर्धारण कर रखा है।

मनुष्य भी प्रकृति से जुड़ा हुआ है या यों कहें कि वह प्रकृति की ही संतान है, तभी तो वह प्रकृति के जितना नजदीक रहता है उतना ही स्वस्थ एवं प्रसन्न रहता है। परंतु मनुष्य अति महत्वाकांक्षी भी है और यही अति महत्वाकांक्षा उसे प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं का अतिरिक्त दोहन करने के लिए प्रेरित करती है। आज के परिपेक्ष्य में भी हम देखें तो प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं का आवश्यकता से अधिक दोहन हमें हर तरफ दिखाई देगा। आप और हम सभी प्रकृति द्वारा दी गई वस्तुओं का आवश्यकता से अधिक उपभोग करते हैं, बिना सोचे समझे कि इन संसाधनों पर केवल हमारा ही नहीं वरन् हमारी आने वाली पीढ़ियों का भी बराबर हक है और हमें इन्हें उनके लिए बचाकर, सहेज कर रखना होगा।

हम हमारे चारों ओर देखते हैं कि बड़े-बड़े पहाड़ों को खनन के नाम पर काट दिया जाता है। नदियों से बजरी का अत्यधिक खनन कर जैसे उनकी कोख ही उजाड़ दी जाती है। तालाबों, सरोवरों को सुखाकर उन पर मकानों व इमारतों का निर्माण कर दिया जाता है। पेड़ों को काटकर जंगलों को सीमित करते जा रहे हैं। भूमिगत जल की मात्रा भी निरंतर घटती जा रही है। वायु प्रदूषण का कहना ही क्या, वाहनों की रेलमपेल से परिस्थितियाँ ऐसी उत्पन्न हो गई हैं कि राजधानी में सम-विषम वाहन संचालन लागू करना पड़ा। भौतिक सुख सुविधाओं की चाह में आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का उपभोग आम बात हो गई है।

ऐसा नहीं है कि मानव इससे अपरिचित है। वह सब जानता है। इस पर निरंतर चर्चा भी करता है। परंतु पेड़ पौधे लगाकर, थोड़ी चिंता जताकर, मीडिया में आलेख लिखकर और कभी कोई विशेष दिवस हो तो हाथों में प्रकृति बचाओ का संदेश लेकर रैली निकालकर संतुष्ट हो जाता है कि हम प्रकृति को बचाने का प्रयास कर रहे हैं। जबकि आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक व्यक्ति इसका महत्व समझे और अपने स्तर पर प्राकृतिक संसाधनों को सहेज कर रखने का प्रयास करे। इसका एक ही तरीका है कि आवश्यकता से अधिक किसी वस्तु का उपयोग न हो। लेकिन यहाँ आवश्यकता को परिभाषित करना आवश्यक है। इसके लिए हम यह कह सकते हैं कि संसाधनों का दुरुपयोग न हो। इसके साथ-साथ संसाधनों का उचित संरक्षण करना भी आवश्यक है। हमें न केवल स्वयं जागरुक होना है वरन् आने वाली

पीढ़ियों को भी इस बारे में जागरुक करना एवं उन्हें सिखाना चाहिए कि कैसे हमें इन संसाधनों को बचाना है और इनका सदुपयोग करना है।

वर्तमान समय में चल रही महामारी कोविड-19 ने हमें प्रकृति के महत्व को बहुत अच्छे से सिखा दिया है। हालांकि यह वायरस प्राकृतिक है या कृत्रिम, यह शोध एवं चर्चा का विषय है, परंतु यह तो सत्य है कि इस वायरस से बचाव का एक ही उपाय है कि स्वयं की रोग प्रतिरोधक क्षमता को अच्छा बनाया जाए और इसका सबसे अच्छा उपाय है, अधिक से अधिक प्रकृति के करीब रहना। व्यक्ति जितना प्रकृति के करीब रहता है उसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता उतनी ही सशक्त रहती है। इस महामारी के दौरान शायद आप और हम सभी ने इसको महसूस किया है। इससे यह संदेश निकलकर आता है कि प्रकृति रुपी माँ की गोद ही हमारे लिए सबसे सुरक्षित स्थान है। साथ ही हमारा भी यह दायित्व है कि हम प्रकृति के संरक्षण में अनुशासित रहें और यह अनुशासन हमारी आने वाली पीढ़ी को भी समझाएं।

महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइन्सटीन ने प्रकृति के बारे में कहा है- 'हम अभी भी एक प्रतिशत के एक हजारवें हिस्से के बराबर भी नहीं जानते हैं कि प्रकृति ने हमें क्या बताया है। प्रकृति में गहराई से देखिए तब ही आप हर चीज को बेहतर ढंग से समझ सकेंगे।'

अनुराग ओझा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

- छोटी छोटी टिप्पणियां हिन्दी में लिखने का प्रयास करें।
- शब्दों के लिए अटकें नहीं।
- आम शब्दों का प्रयोग करें।
- वैज्ञानिक, तकनीकी एवं कार्यालयीन शब्दावली का प्रयोग करें।
- अशुद्धियों से घबराइये नहीं।
- अभ्यास अविलम्ब प्रारम्भ करें।
- हिन्दी में हस्ताक्षर करें।
- रजिस्टरों, सेवा पुस्तिकाओं में प्रविष्टियां हिन्दी में करें।
- फाइलों के ऊपर विषय हिन्दी-अंग्रेजी (द्विभाषा) में लिखें।
- हिन्दी भाषी राज्यों को भेजे जाने वाले लिफाफों पर पते हिन्दी में लिखें।
- कोड़ मैनुअल द्विभाषी में बनवाएं।
- हिन्दी में प्राप्त पत्र का उत्तर हिन्दी में देवें।
- अपने साथियों को हिन्दी में काम करने की प्रेरणा देवें।
- हिन्दी पुस्तकों एवं पत्रिकाओं का भरपूर फायदा उठायें।
- सभी कम्प्यूटरों में यूनिकोड सक्रिय कर हिन्दी में लिखने का प्रयास करें।

निज मन की व्यथा

रहिमन निज मन की व्यथा, मन में राखो गोय

सुनि इठलेहँ लोग सब, बांटि न लैहे कोय ।

यूं तो जीवन के सफर में सभी को अपनी पीड़ा का भार स्वयं को ही वहन करना होता है पर मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है ना, तो वक्त बेवक्त अपनी पीड़ा किसी सहयात्री को अपना समझ उससे साझा भी कर लेता है। पीड़ा कहते समय कभी तो अपेक्षा होती है कि सुनने वाला पीड़ा पर मरहम लगायेगा, पीड़ा कम करने का कुछ यत्न न भी करे तो नयनों के अश्रु पोंछने जितना अपनत्व तो देगा ही, दुःख की गठरी को सदैव के लिए अपने कांधे ना ले सके तब भी कुछ क्षण ठहर विश्राम कर लेने का आश्रय तो देगा ही, पर जीवन की डगर में दुःख आने पर हर पथिक अकेला पड़ जाता है।

परन्तु कटु सत्य है कि इस निष्ठुर संसार में कौन किसकी संवेदना का सहभागी हुआ है, किसी की पीड़ा, दूसरे के लिए उसका उपहास करने का अवसर मात्र बन जाता है। किसी की वेदना, किसी का हर्ष हो जाता है।

ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति होने का दावा करने वाली मानव जाति के अधिकांश लोग मनुष्यत्व के पैमाने पर उन मूक पशुओं से भी निम्न कोटि का आचरण करते हैं जो अपने समूह के किसी सदस्य की वेदना में स्वयं भी अन्न जल त्याग देते हैं।

जब एक वर्ग यह कहता है कि उसका व्यापार ठप्प पड़ा है या उसकी आजीविका का एकमात्र स्त्रोत उसकी नौकरी भी अब नहीं रही तो हममें से अधिकांश लोग उसके समक्ष सहानुभूति का छद्म प्रदर्शन भले ही कर दें परन्तु उसके पीठ पीछे उसका उपहास ही करते हैं कि अरे ! इसने तो बरसों खूब माल कमाया था, ये तो बहुत उडाता फिरता था।

दरअसल हम हीन भावना से ग्रसित और द्वेष भाव से भरे कुंठित लोग हैं जो अन्य सभी की पीड़ा में आनंद खोजते हैं। हम हर दूसरी लाईन को विपदा की लहरों से मिटता देख आनंदित होते हैं कि अहा, आखिरकार ये लाईन अब हमारी लाईन से छोटी हो ही गई।

हमारी ऐसी ही कुंठित मानसिकता के कारण आज लोग अपना दुःख अपनी पीड़ा साझा करने से डरने लगे हैं, अपने आप में सिमटने लगे हैं। यही कारण है समाज का एक बड़ा वर्ग मन ही मन घुटता रहता है और आत्महत्या जैसे कदम उठा लेता है।

हो सकता है कि किसी की वेदना को दूर करने लायक सामर्थ्य ईश्वर ने हमें न दिया हो पर कम से कम किसी की पीड़ा पर हँसने की आसुरी प्रवृति का त्याग तो किया ही जाना चाहिए। हम दैव न हो सकें परन्तु मनुष्य होने के कर्तव्य का निर्वाह तो कर ही सकते हैं।

संदीप साहनी

अतिथि रचनाकार

गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर झण्डारोहण करने के बाद कार्यालय कर्मियों को सम्बोधित करते हुए प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.)

कार्यालय में गणतंत्र दिवस मनाये जाने के सुनहरे पल

कार्यालय में आयोजित किए गए चिकित्सा कैम्प का दृश्य

तिमाही राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में उपस्थित अधिकारीगण

कार्यालय में आयोजित तिमाही हिंदी कार्यशाला में भाग लेते हुए प्रतिभागी

कोरोना काल में वैश्विक महामारी से बचाव के लिए कार्यालय में दवा छिडकते हुए कार्यालयकर्मी

तीनों कार्यालयों के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हिंदी पखवाड़ा समारोह के दृश्य

प्रतियोगिता के विजेता को पुरस्कृत करते हुए एवं कार्यालयीन पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" के अंक 12 का विमोचन करते हुए प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.) एवम् विभिन्न अधिकारीगण

कोरोना काल में कार्मिकों में प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत करने के लिए आयुर्वेदिक काढ़ा बनाया गया एवं सामाजिक दूरी के साथ वितरित किया गया

स्वतंत्रता दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में झण्डारोहण करने के बाद कार्यालयकर्मियों को सम्बोधित करते हुए महालेखाकार महोदया सुश्री अतूर्वा सिन्हा

बेटी का सम्मान

आदिकाल से देते आये, आशीर्वाद यह 'पुत्रवती भव'
पर सोचा नहीं कभी किसी ने, पुत्री बिना यह कैसे सम्भव
पुत्र से पहले पुत्री चाहिये, यह संसार चलाने को
दोनों की है समान जरुरत, जीवन धर्म निभाने को
आ जाती वह बिना बुलाये, खुशियों की बरसात नहीं
पुत्री होना पाप हो जैसे, मन चाही सौगात नहीं
पुत्र का मुख देख-देख कर, हर्षित होते माता-पिता
पर कोने में खड़ी एक बिटिया, सोच रही क्या पाप किया
बिना जरुरत क्यों आई मैं, ईश्वर कैसा न्याय किया
भाई बहन में भेदभाव हो, क्यूं ऐसा इंसाफ किया
बेटी बेटों से बेहतर है, यह हर 'परिणाम' बताता है
परन्तु भविष्य बने पुत्र का, यह हर कोई चाहता है
बेटी को मान पराया धन, बस औपचारिकता निभानी है
पर अपनी मेहनत से, बेटी लिखती नई कहानी है
संसार जानता है, बेटी क्या कुछ नहीं कर जाती है
चाहे जितनी मुश्किल आये, वह रास्ता स्वयं बनाती है
बेटी ने अंतरिक्ष जीत, एवरेस्ट पर परचम लहराया
पुरुषों की गौरव गाथा को, सबला नारी ने दोहराया
बेटी ने ओलम्पिक पदक जीत, भारत का मान बढ़ाया है
पुरुष भी जिसे कर न सके, नारी ने कर दिखलाया है
हर क्षेत्र में है सफल नारी, यह इतिहास बताता है
पुरुष ही उसे कमजोर बता, निज अहम की तुष्टि पाता है
बेटे को कहते कुल दीपक, वह कुल का नाम चलाता है
पर उसे रोशनी देने को, कोई बाती बन जल जाता है
धरती माँ का रुप है नारी, सबका भार उठाती है
फिर उसको ही क्यों मानें बोझ, स्वयं माँ ही उसे मिटाती है
वह ज्योति पुंज व शक्ति पुंज, वह जगत-जननी माता है
उसके बिना इस दुनिया में, न कोई रिश्ता है न नाता है
कर चुके घोर अन्याय बहुत बस, और नहीं बस और नहीं
बेटी को नहीं बचाया तो, प्रलय निश्चित दूर नहीं
बेटे बेटी में फर्क नहीं, यह आओ हम संकल्प करें
उसका आना वरदान तुल्य, उसके आने पर गर्व करें।

नागरमल यादव

नारायणी बाई

मैं जयपुर से उदयपुर चेतक एक्सप्रेस रेलगाड़ी से वातानुकूलित डिब्बे में यात्रा कर रहा था। छः स्लीपरों के हम सभी छः यात्री नीचे की दोनों सीटों पर बैठे थे। एक यात्री के हाथ में अखबार था और वह अखबार पढ़ रहा था। उसको दूसरे यात्री ने कहा - भैया, एक पन्ना मुझे देना। उसने दे दिया। तीसरे यात्री ने भी बीच का एक पन्ना मांगा तो अखबार पढ़ रहे यात्री ने पूरा अखबार खोला और एक पन्ना माँगने वाले यात्री को तो दे दिया, साथ ही चौथे और पांचवे यात्री को भी एक-एक पन्ना देने लगा तो एक ठहाका फूट पडा। मैनें अखबार वाले यात्री से पूछा-कहाँ के रहने वाले हो भाई साहब?
यात्री ने उत्तर दिया- हरियाणा - करनाल का रहने वाला हूँ जी। क्यूं ? के बात हुई ?

मैं फिर हँसा और बोला-इन भाई साहब द्वारा पन्ना मांगे जाने पर अन्य बचे इन दो भैयाओं को स्वतः ही पन्ना देने की क्रिया कोई दिलदार व्यक्ति ही कर सकता है जो कदाचित हरियाणे का ही होगा, मेरी ऐसी सोच है। खैर, अखबार पढ़ने के उपरान्त हरियाणा वासी उबासी लेते हुए बोला-ताऊ जी। बोर हो रहा हूँ। आप हम में सबसे बड़े और बुजुर्ग हैं। कोई कहानी ही सुना दो। ज्ञान का ज्ञान मिलेगा और कुछ रास्ता कट जाएगा।
मैं बोला-ठीक है। आप की इच्छा पूर्ण की जाएगी। मैनें पूछा कि आपका नाम क्या है?

वह बोला-सतवीर है ताऊ जी। मैं बोला-सतवीर बेटा ! कहानी जयपुर के पास के एक गाँव की है परन्तु मुझे गाँव का नाम अभी ध्यान नहीं आ रहा। खैर, गाँव की बसावट एक ऊंची जगह पर की गई थी जिसके बाहर एक विशाल जोहड़ था। जोहड़ के नाके पर पुराना शिव मंदिर था जो प्रायः हरे भरे वृक्षों से घिरा रहता था। मंदिर के चारों ओर रमणीक वाटिका थी जिसमें पुष्पों के पौधे लगे थे ताकि शिव उपासकों को फूलों की कोई कमी महसूस न हो। गाँव में सात जातियों के लोग मिल-जुलकर रहते थे। लगभग तीन हजार की आबादी थी। गाँव में अन्य परिवारों के साथ-साथ नारायणी बाई का भी एक वैश्य परिवार था जिसमें उसके दो बेटों की दो पुत्रवधू तथा तीन बच्चे थे। अच्छा खाता पीता समृद्ध परिवार था। उसके पति की एक सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो चुकी थी। दोनों बेटे निर्माण कार्य का ठेका लेते थे और उस कमाई से प्रसन्नतापूर्वक अपना परिवार पालते थे। नारायणी बाई पूर्णरुपेण शंकर भगवान को समर्पित थी। सुबह नित्य कर्मों से निवृत्त होकर मंदिर की सफाई में लग जाती। झाड़ू पोंचा आदि कार्य करती। ओउम नमः शिवाय, ओउम नमः शिवाय के मंत्र का निरंतर गायन करती हुई शिवलिंग के चारों ओर की सफाई करती। वहाँ लगी काई को हटाती। शिव परिवार की मन लगाकर सेवा करती। इस प्रकार नारायणी बाई का भक्ति भाव से दिन गुजर जाता। नारायणी बाई को गाँव के सभी लोग प्रायः बाई के नाम से पुकारते।

कथा बड़ी प्यारी है। ध्यान से सुनना सतवीर जी ! - मैनें कहा।

सतवीर बोला-ठीक है ताऊ! शुणाओ।

कहानी आगे बढाते हुए मैनें बतलाया कि गाँव में सावन मास शुक्ल पक्ष की हरियाली तीज बड़े धूमधाम से मनाई जाती थी। इस अवसर पर झूले लगना, खान-पान का प्रबंध होना, दूर-दूर के गाँवों के लोग नये परिधानों में हर वर्ष इस मेले में आते और आनन्द लेते। मन्दिर की भव्य सजावट की जाती और शिवलिंग की विशेष पुष्प सेवा होती थी। झांकी बड़ी मन भावन होती थी। उस दिन अर्थात उस शाम को पिछले दस बारह वर्षों से आरती पुजारी के द्वारा न की जाकर बाई द्वारा की जाती थी, ऐसी परंपरा बन चुकी थी।

गाँव में एक अन्य समृद्ध वैश्य परिवार के मुखिया किरोड़ी मल को अबकी बार उत्सुकता हुई कि चाहे जो हो, दस दिन बाद आ रही इस वर्ष की हरियाली तीज के दिन संध्या को शिव भगवान की आरती नारायणी बाई की बजाय मैं करुंगा। उन्होंने अपने समर्थक लोगों में हवा बनानी प्रारंभ की। बैठकों, घरों, नीम के नीचे ताश खेल रही टोलियों और मंदिर में चर्चा होने लगी। कोई कहता- बाई को कोई ठेका दे दिया गया है कि हर वर्ष तीज की आरती बाई ही करेगी? लाला जी क्यों नहीं? या गाँव का कोई अन्य आदमी क्यों नहीं? नहीं, ये गलत बात है, उधर बाई के समर्थक कहते-जब बाई शिव मंदिर की सेवा करती है तब तो कोई नहीं आता कि लाओ; झाड़ू-पोचा हम करेंगे अथवा कीर्तन में भक्तों के लिए बिछाई का प्रबंध हम करेंगे। वर्षों से बाई यह विशेष व्यवस्था करती आ रही है तो अबकी बार क्या परेशानी हो गई? वे कहते-कुछ भी हो, यह परंपरा जारी रहेगी और आरती तो बाई ही करेगी। हम जान भी दे देंगे।

बात बढ़ते-बढ़ते इस वर्ष की तीज की आरती, बाई जी और लाला जी के पक्षधरों के लिए प्रतिष्ठा का विषय बन गई। समूचा गाँव दो गुटों में विभाजित हो गया। बाई ने तो कहा भी कि कोई बात नहीं है, इस बार लाला जी को आरती करने दो। इसमें किसी का कोई पक्ष-विपक्ष नहीं होना चाहिए, परन्तु बाई की बात उसके समर्थकों को पसन्द नहीं थी। दोनों गुट अपनी-अपनी बात मनवाने के लिए किसी भी हद तक जाने के लिए तैयार थे।

समझदार व्यक्तियों द्वारा मंदिर परिसर में तीज से दो दिन पहले एक सभा इस विषय पर चर्चा करने हेतु बुलाई गई। सभा में सर्वमान्य निर्णय हुआ कि कल अर्थात तीज से एक दिन पहले गाँव की आम सभा में इस विशेष आरती की बोली लगाई जाएगी। जिसकी बोली ज्यादा रुपयों की होगी, वह विशेष आरती का हकदार होगा।

बाई तथा उसके कुछ समर्थक कह रहे थे कि बाई के पास इतने पैसे कहाँ हैं जो लाला जी की समृद्धि के सामने बाई बोली लगा सके। कुछ समर्थक बाई के घर आकर बाई का साहस बढ़ा रहे थे कि बाई हम जान लड़ा देंगे। हम तन, मन और धन से आपके साथ हैं। भगवान में श्रद्धा दिखाते हुए बोले-होई है वही, जो राम रचि राखा।

उधर लाला किरोड़ी मल प्रसन्न थे क्योंकि बोली में तो धन बड़ा ही काम आता है सो उन के पास किसी प्रकार की कमी नहीं है। उनके एक समर्थक ने कहा-कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली। बाई की हार निश्चित है। इस तीज के अवसर पर शिवजी महाराज की आरती लालाजी द्वारा किया जाना तय है। कोई समर्थक कह रहा था-घर में नहीं दाने, अम्मा चली भुनाने।

आज तीज से पहले का दिन दौज आ गई। मंदिर परिसर में शाम को आरती के लिए देखते ही देखते भारी भीड़ जुट गई। आरती से पहले मंदिर में मूर्ति के सामने वाले हॉल में लोग दो भागों में बंट चुके थे। एक तरफ बाई और उसके समर्थक थे तो दूसरी तरफ लालाजी और उसके संगी-साथी। आज महिलाएं भी बड़ी संख्या में आई हैं। शंकर जी की आरती व पूजा-अर्चना का कार्य विधिवत पुजारी जी द्वारा संपन्न किया गया।

छोटे से लाउडस्पीकर से कल की तीज के पावन अवसर पर विशेष आरती करने वाले भक्त का निर्णय बोली लगाकर करने की बात कही गई। मुख्य दावेदार नारायणी बाई और लाला किरोड़ीमल के नामों की घोषणा की गई। साथ ही कहा गया कि बोली दस हजार से प्रारंभ की जाए। पहला अवसर लालाजी का होगा। लालाजी हाथ उठाकर बोले-पंद्रह हजार रुपये। बाई बोली-पंद्रह हजार एक रुपया। बाई के समर्थकों में सन्नाटा छा गया। बाई तो एक रुपये से ही बढ़ी। फिर कैसे बोली लगेगी। बाई को कुछ तो दमखम दिखाना चाहिए था। लालाजी बोले-बीस हजार रुपये। बाई ने कहा-बीस हजार एक रुपया। ऐसे बढ़ते-बढ़ते बोली सत्तर हजार रुपये तक पहुँच गई। लालाजी का खेमा शोर मचा रहा था-बोल शंकर भगवान की जय। भोले बाबा की जय। लालाजी के लोग हर्षोल्लास में थे। सत्तर हजार की लालाजी की आवाज के बाद बाई ने कहा-सत्तर हजार एक रुपया। लालाजी तपाक से उछलकर बोले-पचहत्तर हजार रुपये। ये सुनकर बाई ने अपनी धोती का एक पल्ला लिया और अपना माथा पोंछा। कुछ क्षणों के लिए हॉल में शमसानी खामोशी छा गई। सब बाई की ओर देखने लगे। बाई ने शिवलिंग की ओर मुख करके प्रणाम किया ओर बोली-पचहत्तर हजार एक रुपया और साथ में मैं खुद।

न तो बाई के समर्थक और न ही लालाजी के लोग बाई की इस बात को समझ पाए। पुजारी जी ने आवाज लगाई-लालाजी ! आप की अगली बोली क्या है? बोलिए अन्यथा एक, दो और तीन कहे जाने वाला हूँ।

लालाजी समझ गए थे। वे अपना स्थान छोड़कर नारायणी बाई के पास गए और बाई के पैर छुए। बोले बाई ! तुम धन्य हो। तुम्हारा मंदिर के प्रति त्याग, तुम्हारी भक्ति औऱ तुम्हारा बोली लगाना हम सभी गाँव वासियों को पीढ़ियों तक याद रहेगा।

लगभग सभी लोगों ने बाई के पैर छुए। लोग परस्पर चर्चा कर रहे थे-वाह बाई वाह! खूब बोली लगाई। ऐसी बोली, ऐसी अनुपम बोली आज पहली बार देखने में आई है। कमाल कर दिया बाई ! आश्चर्य बाई ! आश्चर्य!

बाई का एक समर्थक कह रहा था-भक्तवत्सल भगवान अपने भक्त की इस प्रकार लाज बचाते हैं। बाई ने स्वयं को भी दान कर दिया। जुग-जुग जिए नारायणी बाई। शंख ध्वनि हो रही थी। जयकारों की आवाजें गूंज रही थी-बोल शंकर भगवान की जय। बम-बम भोले। बाई ने सबका दिल जीत लिया।

मेरी आँखों से जल झरते हुए यात्री बोले-ताऊ! बहुत खूब। बहुत सुंदर कहानी। ताऊ! क्या नारायणी बाई जैसे चरित्र अभी हैं।

मैं बोला- अवश्य हैं। यह कहते हुए हम सो गए।

सुरेश चन्द मित्तल
(से.नि.) वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

हमें संकल्प लेना होगा कि हम सभी सरकारी कामकाज हिंदी में करने में अपना गौरव समझेंगे और हिंदी का प्रयोग न केवल निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए करेंगे बल्कि हिंदी को राष्ट्रभाषा को गौरव प्रदान करने के लिए भरसक प्रयास करते रहेंगे।

कल्पना

अरी कल्पना तूने
ये क्या कर डाला
अपना अस्तित्व मिटा कर
उस कलमुँही कला को
अपनी सौतन बना डाला।
उसमें रूप है, न रंग
सब कुछ तेरी ही तो देन है,
देने से पहले कुछ तो सोचा होता
अरी अपना नहीं
अपने बच्चों का तो
ख्याल किया होता।
तूने अपना अस्तित्व खो कर
उस कला को समृद्ध बनाया
बता उसमें तूने क्या पाया।
स्वहित को तो सभी जीते हैं
परहित को कोई बिरला ही जीता है।
मैने अपना आपा गवां कर
बहुत कुछ पाया है।

तू नहीं समझ सकेगी
कौन है अपना, कौन पराया है।
अरी वो तो मेरी सहोदरा है
एक माँ ने ही हम को जाया है
मेरे देने से यदि कोई
सब के मन भाता है तो
यह सब मेरा नहीं
सृजनहार की माया है।
मेरा क्या, मैं आज हूँ
कल न रहूँ पर,
जमाना तो याद रखेगा
मुझको कि मैं ही
कला का अमूर्त रूप हूँ
मैं कल्पना हूँ।
वास्तव में कल्पना के
बिना कला नहीं,
और कल्पना का अपना
कोई अस्तित्व नहीं ।

मीनाक्षी भारती
अतिथि रचनाकार

चार लाइनें

नित नए होते प्रयोग, नित नए अनुसंधान हैं।
नित उन्नत तकनीक से, प्रकृति पर भारी विज्ञान है।
विज्ञान दंभ मे भूल गया, प्रकृति के आगे सब बेजान है।
एक अदद वायरस आया, घरों में कैद इंसान है।

****

ये कैसी बीमारी जिसका ना कोई ईलाज है।
बार-बार हाथों को धोते, हर चेहरे पर मास्क है।
जिन्दगी के तौर तरीके बदल गए सब आज हैं।
कोरोना ने बदल दिया, जीने का अंदाज है।

****

प्रोटीन, विटामिन-सी का सेवन, इम्यूनिटी बढाते हम।
योग, प्राणायाम निरन्तर कर तन को स्वस्थ बनाते हम।
काढे और गर्म पानी से, संक्रमण से बचाते हम।
सजगता व सतर्कता से, कोरोना को दूर भगाते हम।

****

बुरा नहीं सब कुछ यार, कुछ अच्छा भी है यहां हुआ।
प्रदूषण कम हुआ देखो, नदियों का जल भी साफ हुआ।
सपने और ख्वाहिशें सीमित, खर्चा भी है कम हुआ।
घर बना सैलून दफ्तर, मृत्युभोज भी बन्द हुआ।

****

लॉकडाउन में लगता था, कोरोना जायेगा अब हार।
अनलॉक में जनता निकली बढ़ गई कोरोना की मार।
बेफिक्री का आलम देखो, अब हुई तूफानी रफतार ।
खुद ही चिंता करो सभी चुनावों में व्यस्त सरकार ।।

****

अर्थव्यवस्था बेपटरी हुई, संघर्षो से पड़ गया है पाला ।
बढ़ रही बेरोजगारी, धंधों पर लग रहा है ताला ।
मॉल, सिनेमा, रेल बंद है, बंद यहाँ पाठशाला ।
मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारों से, पहले खुल गई मधुशाला ।

****

लापरवाही बढी अगर तो, संभल नहीं पाएंगे सब ।
यूं ही अगर रफ्तार बढ़ी तो, रोक नही पाएंगें तब ।
नियमों का पालन ही देखो, वैक्सीन काज करेगी अब ।
कोरोना की चैन ये टूटे, सजग सभी जन होंगे जब ।

रवि शंकर विजय
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के तहत (i) केन्द्र सरकार आदि के संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचना, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन या प्रेस विज्ञप्तियाँ (ii) संसद के सदनों में रखे जाने वाले प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदन और राजकीय कागजात (iii) केन्द्र सरकार आदि की संविदा, करार, अनुज्ञप्तियाँ, अनुज्ञापज्ञ, सूचना, निविदा प्रपत्र हिन्दी और अंग्रेजी में जारी किए जाने हैं।

राजभाषा नियम 7 कर्मचारी को आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी में करने तथा स्वयं पर तामील किए जाने वाले आदेश, सूचना आदि हिन्दी में प्राप्त करने की सुविधा प्रदान करता है।

गीत गोविन्द के रचयिता - श्री जयदेव जी

कलियुग में संस्कृत के कवियों मे श्री जयदेव कविराज, चक्रवर्ती महाराज सरीखे हुए और सब कवि, खण्डेश्वर या मण्डलेश्वर राजाओं के सरिस हैं। उक्त महाकवि कृत अति उजागर "श्री गीत गोविंद" काव्य, देव, मनुष्य और नाग इन तीनों में प्रचुर विख्यात हुआ। गीत गोविंद कोकशास्त्र का, काव्य के सम्पूर्ण अंगों का, नव रसों का तथा सरस श्रृंगार का रत्नाकर समुद्र ही है और गीत गोविंद की अष्ट पदियों का जो कोई अभ्यास करे (पढ़े) उसकी बुद्धि को बढ़ाती हैं। तथा जो कोई भी सप्रेम इसका गान करता है तो श्री राधा बल्लभ जी वहाँ उसको सुनने के लिए प्रसन्न हो के प्रकट या गुप्तरूप से अवश्य ही आते है। सन्तरूपी कमल समूहों को सुख उत्पन्न करने वाले श्री पद्मावती जी के पति श्री जयदेव सूर्य समान हुऐ। सभी कवियों के राजा श्री जयदेव जी पूर्व देश में भुवनेश्वर के समीप "केन्दुबिल्ब" नामक गांव में "भोजदेव" पिता और "राधा देवी" माता से ब्राह्मण कुल से उत्पन्न हुए और आपके ह्दय में प्रभु सम्बन्धी रस राज (श्रृंगार रस) भरा था परन्तु उसका स्वाद मन ही मन लिया करते थे। वे विरक्त (वैराग्यवान) ऐसे थे कि अपने गृह को त्याग कर वन में एक वृक्ष तले रहते थे और तनुक्रिया निर्वाह हेतु केवल एक गुदड़ी (कन्था) और एक कमण्ड़ल मात्र रखते थे। उसी काल की वार्ता है कि एक ब्राह्मण श्री जगन्नाथ जी को अपनी कन्या प्रतिज्ञा पूर्वक देने को कह गया। जब वह लड़की युवावस्था में उस योग्य हुई तो उसको देने के लिए वह विप्र जगन्नाथ जी के पास आया। प्रभु की आज्ञा हुई कि जयदेव जी नामक आश्चर्य रसिक भक्त मेरे ही स्वरूप हैं, सो इसी क्षण ले जाके और मेरी आज्ञा उनको सुना के, यह अपनी सुता उन्हीं को दे दो । श्री जगन्नाथ जी की आज्ञा सुन कन्या लिए हुए ब्राह्मण, जहाँ कविराज श्री जयदेव जी श्री प्रभु को स्मरण करते हुए बैठे थे, वहां जाके उनसे प्रार्थना की कि हे महाराज ! यह अपनी कन्या मैं आपको अर्पण करता हूँ। इसका कर ग्रहण कीजिए। आपने उत्तर दिया कि "आप विचार कीजिए, जिसको कन्या लेने

का अधिकार और गृहस्थाश्रम का विस्तार हो, उसी को यह सुन्दर कुमारी दीजिए।" ब्राह्मण बोले कि "महाराज ! मैं जो अपनी इच्छा से कन्या दान करता तो विचार अवश्य करता परन्तु मैं तो जगन्नाथ देव जी की आज्ञा से आपको कन्या दे रहा हूँ। इससे उनकी आज्ञा को आप भी प्रतिपाल कीजिए और कन्या को ग्रहण करना हित मान, अपनी मति में धारण कर, प्रभु की आज्ञा का अनुवर्तन करिए, नहीं तो प्रभु आज्ञा भंग का दोष आपको लगेगा। जयदेव राजी नहीं हुए तब वह ब्राह्मण अपनी कन्या को वहीं छोड़कर चला गया। उन दोनों में (जयदेव एवं पदमावती जी) बहुत वार्ता हुई अंत में उन्हें पत्नी रूप में स्वीकार कर लिया एवं एक झोपड़ी बना उसमें निवास करने लगे। अब श्री जयदेव के मन में काव्य रचना की इच्छा हुई और इस प्रकार गीत गोविंद ग्रंथ बना। भाव गम्भीरता के कारण इस ग्रंथ (पाण्डुलिपि) के एक भाग में श्री जयदेव ने लिखा- स्मर- गरल खंडन मम शिवसि, मंडन देहि पद पल्लव मुदारं अर्थात हे प्रिये ! कंदर्प का विष खण्डन करने वाले और मेरे मस्तक का मण्डन भूषण करने वाले, आप अपना उदार पद पल्लव मेरे शीश पर रख दीजिए। कहा जाता है कि राधा कृष्ण के प्रेम की यह बात सिर्फ कवि के मन में ही आई थी और वे स्नान करने चले गए। तब कृष्ण ने स्वयं जयदेव का रूप धारण कर उक्त पंक्ति उनकी नोट बुक में अंकित की। राधा कृष्ण के प्रति कैसी थी उनकी अपूर्व निष्ठा। कथनानुसार, उन्हीं दिनों जगन्नाथ धाम के राजा ने भी गीत गोविंद नाम का ग्रंथ लिखा और पंडितों से उसका खूब प्रचार कराया। लोगों की हठ वश दोनों ग्रंथ जगन्नाथ जी के मंदिर में रखे गये। राजा वाली किताब को प्रभु ने दूर फेंक दिया व जयदेव कृत गीत गोविंद को पदिक हार की तरह अपने ह्दय में लिपटा लिया। राजा अपना अपमान न सह सका और आत्महत्या करने के लिए समुद्र तट पर पहुंचा, भगवान स्वयं प्रगट हुए और उन्होंने उसे समझाया कि आत्महत्या महा पाप है। जयदेव के गीत गोविंद की तुलना किसी भी ग्रन्थ से नहीं की जा सकती है। आप अपनी पुस्तक के 12 श्लोक जयदेव के ग्रन्थ में लिख दो उसी के साथ-2 तुम्हारे भी श्लोक प्रसिद्ध होंगे।

एक समय श्री जयदेव संत सेवा भण्डारे हेतु अन्न घृतादि सामग्री लेने के लिए मोहर गांठ में बांधे ग्रामन्तर की ओर चले। मार्ग में कई चोर/ठग मिले। जयदेव ने पूछा कि कहाँ जाते हो ? उन्होंने उत्तर दिया कि जहाँ तुम जा रहे हो। वे जान गए कि ये ठग है और चोट/आघात न कर दे, इस डर से गांठ का द्रव्य उन्हें दे दिया। एक बोला जब इसने इतनी चतुराई की है, तो इसे मार डालना ही अच्छा विचार है। कुछ ने उन्हें न मारने की सलाह दी। तब दूसरे दुष्ट बोले कि कहीं पहचान के पकडा दे तब क्या करोगे ? कुसंमत करके उन्होनें श्री जयदेव के हाथ पांव काट कर गड्ड़े में डाल दिया और चले गए। तदुपरांत एक राजा ने जयदेव को देखा। राजा देखता

क्या है कि उनके हाथ- पांव तो कटे हुए हैं परन्तु तेज का उजियारा हो रहा है और उनके मुख पर प्रसन्नता झलक रही है। कारण पूछने पर जयदेव ने कहा कि मेरा तो शरीर ही ऐसा है। राजा उन्हे पालकी में डलवाकर महलों में ले गए एवं औषधि से उनको अच्छा कराया। एक दिन वे ठग साधु भेष धर महल में आए तब जयदेव उन्हें पहचान गए किंतु बदला न लिया अपितु राजा से कह कर उन्हें अन्न धनादि दिलवाया। कुछ दिनों बाद श्री जयदेव के हाथ-पैर पूर्ववत हो गए। राजा ने अपनी प्रार्थना जयदेवजी को अंगीकार कराकर केन्दुबिल्ब से सादर पदमावती जी को लाके दोनों मूर्तियों का मिलाप कराया। राजा की रानी भी पदमावती जी के पास सत्संग को आया करती थी। एक दिन रानी उनके पास ही बैठी थी तभी सेविका ने आकर बताया कि आपके भाई का शरीर छूट गया है और आपकी भौजाईयाँ कोई सती हो गई, कोई शस्त्र से अंग काट कर मर गई, कोई दौड़ कर चिता में कूद गई, पदमावती जी ने रानी को समझाते हुए कहा कि ये प्रीति की रीति नही है, सत्य तो ये है कि प्रिय पति का शरीर छूटते ही प्रिया के प्राण छूट जाय। उनकी बात सुन रानी बोली “ऐसी प्रेम मूर्ति तो जगत में आप ही हो”। रानी ने कुचाल चली, दूती (सेविका) को सिखाकर वहाँ भेजा जहाँ रानी व जयदेव की पत्नी बैठी थी। उसने झूठ बोला (बड़े दुखी होकर) स्वामी जी तो बैकुण्ठ सिधार गए। यह सुन रानी तो झूठ मूठ रोने लगी। जयदेव प्रिया ने कहा तुम व्यर्थ ही रोती हो। महाराज तो अच्छे विराजमान है। रानी ने एक बार इसी प्रकार की चाल चली। भक्तिमती उसके कपट को नहीं पहचान पाई उन्होंने तत्क्षण देह त्याग दी। स्वामी जी ने गीत गोविंद की अष्टपदी गान कर शरीर में स्वर भर दिया, पदमावती उठ कर बैठ गई। उक्त चमत्कार का वर्णन श्री नामा दास जी ने अपने ग्रंथ भक्त माल में भी किया है। श्री जयदेव ने वह स्थान त्याग दिया। श्री गंगाजी की धारा आपके आश्रम से 18 कोस दूर थी, किंतु आप योग विधा द्वारा नित्य ही वहां स्नान करने जाते थे। जब आपका शरीर वृद्ध हो गया, तब भी आपने नेम नही छोडा। श्री गंगा को उन पर दया आई और कहा कि तुम्हारे पास वाली नदी में ही मैं आ जाउंगी। जयदेव बोले, मैं कैसे पहचान सकूंगा ? गंगा बोली, उस नदी में कमल नहीं है, जब मैं आ जाऊंगी तब उसमें कमल खिल जाऐंगे और ऐसा ही हुआ। अभी तक भी केन्दुबिल्ब ग्राम में यह स्थान (नदी) “जयदेई गंगा” नाम से प्रसिद्ध है। सज्जन लोग उसे श्री गंगा तुल्य मानकर सेवन स्नान पान करते हैं।

प्रगट भयौ जयदेव मुख, अद्भुत गीत गुविंद ।
कह्यौ 'महा श्रंगार' रस, सहित प्रेम मकरंद।।

बनवारी लाल सोनी
(से.नि.) वरिष्ठ लेखापरीक्षक

"याद के बादल"

नयनों के नीले अम्बर पर,
याद के बादल
कभी घिरते कभी मिटते
तुम्हारी याद के बादल ।।
बिना आवाज के अक्सर
यूँ ही चुपचाप झर जाते
विरह की आग से पिघले
मिलन की आस के बादल।।
कभी खुशियों की बातें हो
तो मुझे घेर लेते
नहीं क्यू ? साथ में वो तेरे
ये पूछते मुझसे बादल ।।
मैं कहता हूँ, नहीं हूँ,
मैं अकेला, साथ नहीं वो मेरे
मेरे अहसास में सुन लो
मेरी सांसों मे शामिल है
अक्सर यही बातें
वो सुनकर घूम जाते हैं,
चहकते, खिलखिलाते
फिर गरजते याद के बादल ।।
रूलाती है मुझे जब भी
तुम्हारी प्यार की बातें
मेरे अश्कों को पी जाते
तुम्हारी याद के बादल ।।

सोहित शर्मा
अतिथि रचनाकार

गीत

मोर को मदिरा पिला के
बाँध दी पायल पगों में
नाचता फिरता तभी वो
बाग उपवन वाटिका में
मोर को मदिरा पिला के।
गीत कोयल ने दिया
संगीत भँवरों ने दिया
बुलबुलों ने ढ़ाल दी
संगीत लहरी भैरवीं में
वस्त्र पीले त्याग वृक्षों ने
मोर को मदिरा पिला के।
नये धारण किए
मुस्कराई हर कली
मुरझाये मुखड़े खिल गये
बन गई दुल्हन धरा
सिमटी हुई चूनर हरी में
मोर को मदिरा पिला के।
छुप रहा नित पल्लवों में
कोपलों की ओट में
धूल पीली सी बिछा दी
आम ने अमराईयों में
मोर को मदिरा पिला के।
चल पडी वादे सबा
गंध परिमल सी लिए
बौर, बौराये गिरे
मद होश बिन पीये, पीये
जागती नरगिस रही
शबनम को लेके गोद में
मोर को मदिरा पिला के।
थिरकते यूँ कर रहे
स्वागत सभी ऋतुराज का
आज चिर परिचित मिलन है
विरही रति के राज का
चाँद सा मुखडा छुपा क्यों
कुटिल कुन्तल ओट में
मोर को मदिरा पिला के
बाँध दी पायल पगों में।

बिशन लाल अनुज
(से.नि.) वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

काम की ई-एप्लीकेशन

आज का युग कम्प्यूटर का युग है। घर से बैठे बैठे अधिकांश कार्य हम लोग डिजिटल रूप से करते हैं। इसके लिए हमें मोबाइल/कम्प्यूटर में बहुत सारी एप्लीकेशन/एप डाउनलोड करने होते हैं। इन एप्लीकेशन से हमारी लाइफ पहले से आसान हो गयी है। हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में काम आने वाले कुछ एप्लीकेशन का विवरण इस प्रकार से हैः-

1. **जीवन प्रमाण योजना**

Jeevanpramaan.gov.in पर पेंशन भोगी कर्मचारी जीवन प्रमाण एप्लीकेशन में जरूरी जानकारी भरकर घर या कॉमन सर्विस सेन्टर से डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट बनवा सकते हैं। जीवन प्रमाण योजना का उद्देश्य सेवानिवृत्त सरकारी कर्मचारियों के लिए समुचित प्रक्रिया को आसान बनाना है। इसमें पेंशनभोगियों के बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण के लिए आधार संख्या का प्रयोग किया जाता है एवं डिजिटल प्रमाण पत्र जारी किया जाता है जिसे पेंशन संवितरण एजेंसी ऑनलाइन देख सकती है। यह वरिष्ठ नागरिकों की समस्याओं को कम करता है। हेल्प लाइन नं.- (91)-020-3076200

2. **टेली लॉ योजना**

https:/www.tele-law.in, इस डिजिटल प्लेटफार्म का उपयोग करते हुए कानूनी विवादों का प्रथम चरण में ही निपटान - केन्द्रीय न्याय विभाग की पहल है। इस योजना के माध्यम से संचार व सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले ग्रामीण परिवारों को निःशुल्क कानूनी सलाह उपलब्ध कराई जाती है। वर्ष 2020 तक इसके तहत रजिस्टर्ड प्रकरणों की संख्या 5.53 लाख हो गई है।

3. **डिजिटल लॉकर**

यह एक वर्चुअल लॉकर है जिसे जुलाई 2015 में लाँच किया गया था। इसे इस्तेमाल करने के लिए आधार कार्ड होना अनिवार्य है। डिजी लॉकर में देश के नागरिक पेनकार्ड, वोटर आई.डी., पासपोर्ट इत्यादि कोई भी सरकारी प्रमाण पत्र स्टोर कर सकते हैं। आधार कार्ड संख्या से डिजी लॉकर खाता ऑनलाइन खोला जा सकता है। इसका उद्देश्य कागजी दस्तावेजों के उपयोग/चलन को कम करना है।

वेबसाइट- digitallocker.gov.in

4. पॉजिटिव पे सिस्टम

1 जनवरी 2021 से आर.बी.आई ने चेक से पेमेन्ट करने के लिए पॉजिटिव पे सिस्टम लागू किया है। इस नियम के तहत 50,000 से ऊपर के भुगतान पर जरूरी विवरण की पुष्टि करने की आवश्यकता होगी। इस सिस्टम से फर्जी चेक के जरिये होने वाली धोखाधड़ी को समाप्त किया जा सकेगा।

5. **उमंग ऐप-**

उमंग ऐप एक मोबाइल ऐप है। इसे डिजिटल इंडिया के तहत ई-गवर्नेंस हेतु इलैक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय एवं राष्ट्रीय ई-गवर्नेस डिविजन द्वारा विकसित किया गया है। इसके जरिए केन्द्र सरकार से लेकर स्थानीय निकायों तक की नागरिक जनित सेवाओं को एक्सेस किया जा सकता है। यह ऐप हिंदी, अंग्रेजी के साथ ही भारत की अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध है। उमंग ऐप पर निम्न सेवाएं उपलब्ध हैः- आधार सेवा, डिजिलॉकर, आयुष्मान भारत, भारत पे बिल, मोबाइल किसान पोर्टल, सीबीएसई, एआईसीटीई - तकनीकी शिक्षा, भारत गैस, चाईल्ड लाईन - 1098. एकेपीएस (अन्नपूर्णा कृषि प्रसार सेवा)।

शिवपाली खण्डेलवाल
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कोरोनाः रेस अभी बाकी है

COVID-19, जिसमें CO है कोरोना के लिए, VI है वायरस के लिए, D है डिजीस के लिए और 19 है वर्ष 2019 के लिए, को वैसे तो वर्ष 2019 में पहचाना गया परन्तु विश्व ने इसका रौद्र रूप वर्ष 2020 में देखा। भारत भी इससे अछूता नहीं रहा और हमने तमाम सावधानियां अपनाने के बावजूद बहुत से अपनों को खोया। कुछ राज्यों मे उतार-चढ़ाव को छोड़ दिया जाए तो कुल मिलाकर वर्ष 2021 मे इसका प्रकोप कुछ नियंत्रित हुआ है परन्तु दूसरी लहर की आशंका से इन्कार नहीं किया जा सकता। वैक्सीन का प्रयोग भी प्रारम्भ हुआ है लेकिन फिक्र की बात ये है कि संक्रमित होने वाले लोगों की संख्या कम होने के साथ ही हमने इससे बचाव की सावधानियां जैसे मास्क का प्रयोग, सामाजिक दूरी, नियमित अन्तराल पर हाथ धोना, सेनिटाइजर का प्रयोग एवं एक स्थान पर एकत्रित नहीं होना आदि का पालन भी कम कर दिया है । यह अत्यन्त चिन्ताजनक स्थिति है क्योंकि वायरस अभी पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है और जरा सी असावधानी भी परेशानी का बड़ा कारण बन सकती है । कल्पना कीजिए, हर्डल रेस का कोई धावक तमाम बाधाओं को पार कर आगे बढ़ रहा है और फिनिश लाइन नजर आते ही वो दौडना बन्द कर देता है। तो अभी हमें फिनिश लाइन सिर्फ नजर आई है, हमने उसे पार नही किया है। अत: सामान्य सावधानियों के अलावा कुछ बातों पर विचार करना समीचीन होगा। कोरोना की स्ट्रेटेजी है व्यक्ति से व्यक्ति में फैलना। उसे स्वर्ण अवसर मिलता है जब हम एक स्थान पर एकत्र होते हैं, भीड़ लगाते हैं या समारोहों का आयोजन करते हैं। माह अगस्त 2020 में यू.एस. के “मैंने” में एक शादी समारोह का आयोजन किया गया जिसमें तमाम दिशा निर्देशों का उल्लंघन करते हुए 65 मेहमान एकत्र हुए। वायरस को मौका मिला और इस समारोह की वजह से कुल 176 लोग संक्रमित हुए और अन्ततः 7 ऐसे लोग मारे गए जो इस समारोह में गए भी नहीं थे। अतः जहां तक हो सके एक स्थान पर अधिक संख्या में एकत्र होने से बचें और आवश्यक ही हो तो खुले स्थान का चयन करें। यह आपको और आपके अपनों को काफी हद तक संक्रमण से बचायेगा। गर्मियां आ रही है और अगर आप ए.सी. का प्रयोग करते हैं तो वायरस के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार करते हैं। ए.सी. में कमरे की हवा ही सर्कुलेट होती रहती है और वायरस की डेन्सिटी को बढ़ाती रहती है। हो सके तो पंखे और कूलर का प्रयोग करें और ए.सी चलाना ही है तो कमरे में वायु का प्रवाह अवश्य रखें। इसी प्रकार यदि आपको टैक्सी कार, जो कि बन्द होती है, में यात्रा करनी आवश्यक है तो स्वयं पीछे बाईं ओर बैठें और ड्राईवर से कहें कि आगे का बाईं ओर और पीछे का दाईं ओर का कांच खुला रखे । इससे आपके और ड्राईवर के बीच वायु प्रवाह की अदृश्य दीवार बन जायेगी जो वायरस को एक दूसरे की ओर जाने नहीं देगी । वायु प्रवाह की उपलब्धता की यही सावधानी सार्वजनिक वाहनों में भी रखी जा सकती है। सबसे बड़ी बात, मास्क के प्रयोग में बिल्कुल भी कोताही ना बरतें। यह संक्रमण से बचाव में सर्वाधिक कारगर सिद्ध हुआ है।

अभी भारत में दो तरह की वैक्सीन प्रयोग की जा रही है- सीरम इन्स्टीटयूट की कोविशील्ड और भारत बायोटेक की कोवैक्सीन। जल्दी ही कुछ और वैक्सीन भी अप्रूवल प्राप्त कर सकती हैं। प्रयोग की जा रही दोनों ही वैक्सीन की चार सप्ताह के अन्तराल पर दो डोज लेनी होती है और दूसरी डोज के दो सप्ताह बाद ही अधिकतम प्रोटेक्शन प्राप्त होता है। ध्यान रहे, वैक्सीन का लाभ व्यक्तिगत होने से ज्यादा सामुदायिक होता है। लगभग 80 प्रतिशत लोगो को वैक्सीन लग जाने के बाद ही हर्ड इम्युनिटी विकसित हो पाती है। अर्थात फिर वायरस को फैलने के लिए नए शरीर नहीं मिलते । वो जहां जाता है पहले से एन्टीबॉडी तैयार मिलते हैं और अन्तत: वो शक्ति खो देता है। तो अभी वायरस से रेस बाकी है और रूकना नहीं है। आपको कोरोना हो चुका है तो भी और वैक्सीन लग चुका है तो भी मास्क एवं अन्य सावधानियां अवश्य रखें। आप स्वयं प्रोटेक्टेड होने के उपरान्त भी वायरस के वाहक हो सकते हैं और दूसरो को वायरस ट्रांसमिट कर सकते हैं। आखिरी बात, आपकी इम्यूनिटी आपको संक्रमित होने से नहीं बचायेगी अपितु संक्रमित होने पर आपको शीघ्र स्वस्थ होने में सहायता करेगी। इसलिए इम्यूनिटी अच्छी रखें लेकिन अन्य सावधानियों को ना छोड़ें । सजग रहें- स्वस्थ रहें।

मनीष शर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा अनुभाग

दिवास्वप्न

रतन बेटा उठ रे ! वह बाबा की आवाज सुन कर उठ गया और बाबा बाबा कह कर खाट पर बैठ गया। बाबा आप अभी ही आए दिखते हो। रतन ने बूढ़े बापू से पूछा। आज अपने गाँव पर बरखा मेहरबान हो रही है, घर बैठे बैठे उमस से बेहाल हो रहा था, धीरे धीरे लाठी टेकता हुआ मैं खेत तक आ गया। बापू ने रतन की बात का जवाब दिया। बाबा बरखा की बूंदों से भीगी हुई माटी की सुगन्ध मेरे नाक में पहुंचते ही मुझे जाग आ गई थी; कहता हुआ रतन झोपड़े से बाहर आ गया। आषाढ़ माह का अंतिम सप्ताह चल रहा था, बारिश से तर-बतर हुए खेत देख कर रतन का मन हर्षित हो गया। बाबा से बोला, बाबा बरखा खूब बरस गई है अब खेत को बोने की तैयारी करेंगे। रतन तू तो पिछले तीन सालों से शहर में रह रहा है, अब यह खेती तेरे बस की कहां है। कल खेत में हलवाहों को ला कर खेत में हल चलवाएंगे। मेरे को तो आज दिन में ही घर की कोटड़ी में पड़े पड़े नींद आ गई थी, तब सपनों में वर्षा बरसती दिख रही थी। उम्मीद है कि इस बार अच्छा जमाना होगा और खेतों में फसल लहलाएगी। बाबा खुशी के मारे तेज स्वर में लगातार बोलता जा रहा था।

बाबा मैं भी आज ऊमस से परेशान हो कर, घर से छाछ रोटी खाकर खेत की तरफ आ गया था। मुझे भी आज शहर की एवं उन परिस्थितियों की याद आ रही थी। फाल्गुन के महीने होली मना कर मैं कोसों दूर दक्षिण के महानगर में गया था। वहां तीन साल से कारखाने में मजदूरी कर रहा था, अच्छी कमाई हो रही थी मगर महामारी के कारण सब कुछ बन्द हो गया। डेढ़ माह तक वहां बन्द कारखाने में रहा व फिर बड़ी मुश्किल से आलू के बोरों से भरे ट्रक में बैठ कर गाँव तक पहुंचा था। रतन ने बापू से कहा। खेत में बने झोपड़े में आते ही मुझे नींद आ गई। तब नींद में मुझे ऐसे लगा कि शहर मुझे फिर से बुलाएगा। मालिक का फिर से संदेश आएगा। वैसे दिन में आए हुए सपने (दिवास्वप्न) कभी भी सच्चे नहीं होते पर बाबा आपका बरखा का सपना तो साकार हो गया लगता है। शायद रतन की बात बाबा को अच्छी नहीं लगी, वह थोड़ा धीरे से बोला- बेटा तू तो गांव आने के बाद भी दो तीन दिन बाद से ही पंचायत समिति द्वारा चलाए जा रहे तलाई निर्माण के काम पर जा कर कमाई कर रहा है; अब खेत भी जोतना है। चलो आगे देखते हैं खेत में बाजरा, मोठ, ग्वार बोएंगे व वर्षा होती रही तो अच्छी फसल पाएंगे। बाबा की बात जारी थी कि रतन के मोबाइल की रिंग टोन बजी और रतन झोपड़े में अन्दर जा कर बात करने लगा। पांच मिनट तक बात करके वह बाबा के पास आकर बोला, बाबा शहर से कारखाने के सुपरवाइजर का संदेश आया था, महीने भर बाद मुझे शहर में काम मिल सकता है। रतन की बात सुनकर बूढ़ा बाबा लम्बी सांस ले कर बोला तो क्या बेटा तू शहर चला जाएगा। बाबा वर्षा की बूंदों से भीगी माटी की सुरभि का आनंद आज मुझे बरसों के बाद नसीब हुआ है। आप का स्वप्न सच्चा होगा, हमारे खेत में हरियाली की चादर बिछेगी, देखना खूब अनाज पैदा होगा। मैं भी गांव में रह कर ही खेती बाड़ी सम्भालूंगा। कल अपने टैक्टर से खेत बुवाई की तैयारी करेंगे। बाबा आओ, अब घर चलते हैं। बाबा और रतन गांव की ओर रवाना हो गए। बाबा की चाल में उत्साह था, वह तेज चल रहा था। उसका स्वप्न साकार हो गया, उसका बेटा अब उसके साथ रहेगा और खेती में हाथ बटांएगा।

देव शर्मा
(से.नि.) सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सपने एवं हकीकत

जिन्दगी संघर्षो का प्रतिरूप है
कुछ सपने हैं, कुछ हकीकत है।
यहाँ किसी को वक्त से पहले कुछ नहीं मिलता
तो किसी को वक्त के बाद भी नहीं मिलता।
बुने जाते हैं कुछ सपने यहाँ
कुछ टूट जाते हैं, कुछ अपने बन जाते हैं।
दौर ये संघर्षो का चलता ही रहता है
टूटकर बिखरकर भी, ये कारवां चलता ही रहता है।
कहते हैं सपने जागती आँखों से देखे जाते हैं
पर जिन आँखों को, अपनों की भूख सताए हरपल,
उन आँखों को सपने लेने का भी समय कहाँ।
कोई सोता है मीठे सपनों के लिए
कि किसी को नींद ही कहां।
कोई संघर्ष करता है करोड़ों कमाने के लिए
कि किसी की भूख ही संघर्ष बन जाती है।
जी लेते हैं कुछ लोग बिना सपनों के
वैसे भी सभी के सपने कहाँ पूरे होते हैं।
रात गुजरती है, दिन निकलता है
पर किसी की जिन्दगी में,
अंधेरा कायम ही रहता है।
वो दौर कुछ और होगा, जब मिले होंगे अपने
पर यहां तो अपनों से मिलना भी सपना भर है।
सतरंगी होती है सपनों से भरी जिन्दगी
पर हकीकत बड़ी बेरंग होती है।
जागने पर रो देता होगा वो पिता भी,
जब सपनो में वो राजा और बेटा राजकुमार होता होगा
भले ही हकीकत का राजा नहीं है पर
जिन्दगी खपा देता है वो बेटे को राजकुमार बनाने में।

गरीब के सपने भी बंद आंखो में आते हैं
क्योंकि उन्हें टूटकर बिखरना होता है।
इतना समय कहां उसे कि
जागती आखों को सपने देखने का समय दे।
सपने भी आजकल बडे स्टेटस वाले हो गये हैं
गरीब के तो अधूरे व अमीर के पूरे करने वाले हो गए हैं।
कहते हैं संघर्ष करोगे, तो मिलेगा मन चाहा मुकाम
तो क्यों खाली है पेट इस किसान का,
जिसने दिन-रात संघर्ष ही किया है।
बना लो दोस्त अपने पड़ोसी को भी
दु:ख में रोने के लिए फेसबुक वाला नहीं आने वाला।
कुछ सपने जो पूरे होते हैं, खुशी देते हैं,
पर टूटने वाले सपनों का दु:ख ज्यादा होता है।
रो दोगे उस दिन जब नहीं मिलेगा,
किसी अपने के कंधे का सहारा,
कि सपनों की हंसी चिरकाल नही होती।
सपनों का क्या है, सबको राजा ही बनाते हैं
पर हकीकत में सब एक ही होते हैं।
सोती आंखों के सपनों पर हमें विश्वास नहीं,
और जागने पर सपने देखने का समय नहीं
क्या करेंगे सपने देखकर, जिन्हे अंत में टूटना ही है।
बनूं किसी और का सपना,
बस इतना ही सपना है।
कुछ हो न हो बस अपनों का साथ हो
मेरा बस इतना ही सपना है।

राव जितेन्द्र प्रसाद
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

कार्यालय द्वारा वर्ष 2020 में राजभाषा हिन्दी में किये गये कार्य का प्रगति प्रतिवेदन

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अन्तर्गत विनिर्दिष्ट कार्यालय आदेश, नियम, अधिसूचनाएँ, प्रशासनिक एवं अन्य प्रतिवेदन, प्रेस विज्ञप्तियां, संसद के दोनों सदनों के समक्ष रखे जाने वाले राजकीय कागज-पत्र, संविदा, करार, अनुज्ञप्तियाँ, अनुज्ञा पत्र, निविदा सूचनाएँ और निविदा प्रारूप द्विभाषी (अंग्रेजी और हिन्दी) में जारी किए जायेंगे । वर्ष के दौरान कुल **484** कार्यालय आदेश जारी किए गए।

राजभाषा विभाग (राजभाषा नियम 5 के अन्तर्गत) के अनुसार हिन्दी में प्राप्त कुल पत्रों **29,768** में से **14,330** पत्रों का जवाब हिन्दी में दिया गया। शेष पत्रों का जवाब दिया जाना अपेक्षित नही था ।

वर्ष के दौरान अंग्रेजी में कुल 3,384 पत्र प्राप्त हुए जिसमें से 1849 पत्रों के जवाब हिन्दी में दिए गए ।

राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार 'क' एवं 'ख' क्षेत्र में स्थित कार्यालयों से 100% एवं 'ग' क्षेत्र में स्थित कार्यालयों से 65% पत्राचार हिन्दी में करना अनिवार्य है। उन क्षेत्रों में कार्यालय द्वारा वर्ष में कुल 65,001 पत्र भेजे गए । जिनमें से हिन्दी में **63,535** पत्र एवं अंग्रेजी में 1,466 पत्र प्रेषित किए गए ।

राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा फाइलों में 'क' क्षेत्र में 75%,'ख' क्षेत्र में 50% एवं 'ग' क्षेत्र में 30% टिप्पण हिन्दी में लिखे जाने अनिवार्य है। कार्यालय द्वारा वर्ष में कुल **17,488** टिप्पण लिखे गए जिनमें से हिन्दी में लिखे गए टिप्पणों की संख्या **16,204** है जो कि निर्धारित लक्ष्य से अधिक है।

वर्ष के दौरान कार्यालय द्वारा **657** निरीक्षण प्रतिवेदन हिन्दी में जारी किए गए । हिन्दी में भेजे गए निरीक्षण प्रतिवेदनों की प्रतिशतता **100%** रही ।

कार्यालय में यूनिकोड-इन्स्क्रिप्ट की-बोर्ड प्रशिक्षण व्यवस्था की स्थापना की गई व वर्ष के दौरान कुल **41** अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया ।

वर्ष में **04** हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिनमें कुल **70** कार्मिकों द्वारा भाग लिया गया । कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की **04** तिमाही बैठकों का आयोजन कार्यालय प्रमुख की अध्यक्षता में किया गया एवं सभी सदस्य शाखाधिकारियों ने उक्त बैठकों में भाग लिया। राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार **04** तिमाही हिन्दी संगोष्ठियों का आयोजन किया गया ।

सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग के अन्तर्गत कार्यालय की वेबसाइट पूर्ण रूप से द्विभाषी एवं अद्यतित है।

वर्ष भर में अन्य कल्याणकारी गतिविधियाँ

कार्यालय में 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन किया गया जिसमें प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा ध्वजारोहण किया गया एवं कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

माह जनवरी 2020 में पश्चिम क्षेत्रीय फुटबाल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें प्रधान महालेखाकार कार्यालय राजस्थान, जयपुर विजेता रहा।

05 फरवरी 2020 को कार्यालय के कल्याण प्रकोष्ठ द्वारा चिकित्सा जांच शिविर का आयोजन किया गया जिनमें चिकित्सकों द्वारा कार्मिकों की विभिन्न जांचे की गई ।

15 अगस्त 2020 को स्वतन्त्रता दिवस समारोह का आयोजन किया गया जिसमें महालेखाकार महोदया द्वारा ध्वजारोहण किया गया एवं कार्यालय के कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

दिनांक 14 सितम्बर, 2020 से 28 सितम्बर, 2020 तक कार्यालय में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताओं का ऑनलाइन आयोजन किया गया एवं विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

कोरोना काल में आयोजित किए गए सभी कार्यक्रमों में सरकार द्वारा जारी कोरोना गाइडलाइन का पूर्णतयाः पालन किया गया। स्वच्छता अभियान, सतर्कता जागरूकता सप्ताह, राष्ट्रीय एकता दिवस एवं सद्भावना दिवस की शपथ सभी कार्मिकों द्वारा अपने बैठने के स्थान पर ही ली गई एवं सम्पूर्ण कार्यालय को बार बार सेनिटाईज किया गया तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने हेतु दो बार काढ़ा वितरण भी किया गया।

हिंदी पखवाड़ा - 2020 प्रतियोगिताओं के विजेताओं की सूची

नाम	पदनाम	प्रतियोगिता का नाम	स्थान
नरेश कृपलानी	सहायक लेखाधिकारी	लघु-कथा लेखन	प्रथम
रवि शंकर विजय	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	लघु-कथा लेखन	द्वितीय
शिवपाली खण्डेलवाल	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लघु-कथा लेखन	तृतीय
रजनीश शर्मा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	स्व रचित कविता लेखन	प्रथम
राव जितेन्द्र प्रसाद	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	स्व रचित कविता लेखन	द्वितीय
कैलाश आडवानी	वरिष्ठ लेखाकार	स्व रचित कविता लेखन	तृतीय
भगवान दास	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	टिप्पण-प्रारूपण	प्रथम
विजय कुमार अग्रवाल	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	टिप्पण-प्रारूपण	द्वितीय
संतोष कुमार बूला	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	टिप्पण-प्रारूपण	तृतीय
रक्षा गुप्ता	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	निबन्ध लेखन	प्रथम
राजीव भाटिया	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	निबन्ध लेखन	द्वितीय
शंकर लाल	एम.टी.एस.	निबन्ध लेखन	तृतीय

श्री कमलेश रावत
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

पाठकों के अभिमत

देश के विभिन्न कार्योलयों से पिछले अंक पर प्रतिक्रिया स्वरुप हमें सुधी पाठकों के जो अभिमत प्राप्त हुए, उनमें से कुछ पत्रों के अंश साभार प्रकाशित कर रहे हैं।

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" के 12वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आन्तरिक साज-सज्जा सुन्दर एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं पठनीय है। विशेष रूप से शिवपाली खण्डेलवाल जी द्वारा लिखा गया लेख "प्लास्टिक एवं उसके दुष्प्रभाव" अत्यन्त ही ज्ञानवर्धक है। पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु ढेर सारी शुभकामनाएं।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी कक्ष), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), पश्चिम बंगाल, कोलकाता

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" के बारहवें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। रचनात्मकता से परिपूर्ण पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यन्त ही मनोरम व मनमोहक है। 'ये कैसी माँ', 'प्रेमानुभूति', 'भागीरथी', 'जिंदगी की ढलती शाम', 'बचपन की वो याद' आदि रचनाएं रुचिकर एवं सराहनीय ही नहीं बल्कि संग्रहणीय भी हैं। अन्य सभी रचनाएं भी पठनीय एवं विचारणीय हैं। आशा करता हूं कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी।

हिन्दी अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं हक.) कर्नाटका

पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ हमें कई विभिन्न विषयों पर हमारा ज्ञानवर्धन करती है। पत्रिका में समाविष्ट रचनाएं सरल भाषा में हैं तथा भावपूर्ण, रोचक, उत्कृष्ट एवं शिक्षाप्रद हैं। श्री सत्यबीर सिंह की 'अतुल्य उत्तराखंड की अमूल्य निधि' हमें वहाँ के प्राकृतिक सुन्दरता से इत्तर अन्य कम ज्ञात स्थानीय विशेषताओं के बारे में अवगत कराते है। वैसे तो सभी रचनाएं प्रशंसनीय है, श्री विक्रम भारती की कविता 'मैं चलना छोड़ नहीं सकता' उल्लेखनीय है क्योंकि यह कविता हमारे अन्दर नयी आशा एवं उर्जा का संचार करती है। "लेखापरीक्षा अर्चना" के उत्तम संपादन गुणवत्ता रचनात्मकता एवं संकलन हेतु सम्पादक मंडल के सभी सदस्यों को साधुवाद एवं पत्रिका की निरन्तर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएं।

हिन्दी अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) तमिलनाडु एवं पुदुचेरी

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" के 12वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटि की हैं। विशेष रूप से 'वर्तमान में हिंदी की बढ़ती आवश्यकता', 'जयपुर का अद्भुत चरित्र', 'प्रेमानुभूती', 'नव वर्ष के प्रथम दिन की सांझ', 'प्लास्टिक एवं उसके दुष्प्रभाव', 'भागीरथी', 'लेखापरीक्षा वर्ग पहेली' आदि रचनाएं अत्यन्त ही सुरूचिपूर्ण एवं सराहनीय हैं। पत्रिका के मुख पृष्ठ एवं आवरण पृष्ठ भी अति सुंदर है।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्ष), कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा, चण्डीगढ़

"लेखापरीक्षा अर्चना" के अंक-12 की प्रति प्राप्त हुई, जिसके लिए आपको धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक तथा इसमें समाहित रचनाएं ज्ञानवर्धक है। विशेषतः श्रीमती लवली शर्मा की 'ये कैसी माँ', श्री रामानन्द शर्मा की 'खिड़की', श्री देव शर्मा की 'लघुकथाएं' सराहनीय है। श्री विक्रम भारती 'मै चलना छोड़ नहीं सकता', श्री तुलसी राम धाकड़ 'प्रेमानुभूति', श्री कैलाश आडवानी 'नव वर्ष के प्रथम दिन की सांझ' कविताएं अति सराहनीय है।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति एवं उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

लेखाधिकारी/प्रशासन, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक), आन्ध्र प्रदेश, हैदराबाद

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" के 12वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में दी गई रचनाओं की भाषा सहज एवं सरल है जो पाठक गण की रूचि को बांधने में सफल रहती है। छायाचित्रों का संकलन उत्तम है। लेखापरीक्षा वर्गपहेली के माध्यम से लोगों में हिंदी भाषा के प्रति रूचि जगाना काफी सराहनीय है। कविता 'मैं चलना छोड़ नहीं सकता' दर्शाती है कि सफलता एक मोती की तरह होती है जिसे पाने के लिए समुद्र में गोते लगाने पड़ते हैं एवं गहराई में जाकर निरंतर प्रयास करना पड़ता है। कविता 'जिंदगी की ढ़लती शाम' में जीवन में मूल्यवान समय की कटु यथार्थता का चित्रण किया गया है।

आशा करता हूँ कि आपकी पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" नई चेतना एवं नये विचार से समाज को उत्कृष्ट बनाने में अपना योगदान देती रहेगी। "लेखापरीक्षा अर्चना" परिवार को पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति एवं कुशल सम्पादन के लिए गोमती परिवार की ओर से ढ़ेर सारी शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का कार्यालय त्रिपुरा, अगरतल्ला

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित "लेखापरीक्षा अर्चना" के 12वें अंक की प्रति प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएं अत्यन्त ही उच्चतर श्रेणी की हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी प्रकोष्ठ, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) झारखण्ड का कार्यालय, राँची

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" के 12वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का यह अंक स्तरीय रचनाओं से परिपूर्ण है। इस अंक में शामिल कविताएं, कहानियाँ, लेख और गीत सभी स्तरीय हैं। रचनाओं की विविधता से सम्पादकीय कौशल का पता चलता है। राजभाषा हिंदी के क्रियान्वयन और प्रचार प्रसार में "लेखापरीक्षा अर्चना" पत्रिका अपनी भूमिका को सफलतापूर्वक निभा रही है। यह भविष्य में और बेहतर करें, यही कामना है।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना

आपके कार्यालय द्वारा भेजी गई अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" के 12वें अंक की एक प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख व रचनाएं शिक्षाप्रद, ज्ञानवर्धक, प्रभावशाली एवं रूचिकर हैं।

प्राकृतिक सौन्दर्य को दर्शाती पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही सुंदर है। श्री विक्रम भारती द्वारा रचित 'मैं चलना छोड़ नहीं सकता' एक प्रेरणादायक कविता है जो जीवन में तमाम तकलीफों व बाधाओं के बावजूद पथ पर निरंतर आगे बढते रहने और लक्ष्य को किसी भी परिस्थिति में पाने की प्रेरणा देती है। लवली शर्मा द्वारा लिखित 'ये कैसी माँ' अच्छे संस्कार को प्रोत्साहित करने वाली कहानी है। पदम चन्द गाँधी द्वारा लिखित 'कौन छीन रहा है बच्चों का बचपन' हाईटेक सोसाईटी एवं हाई प्रोफाइल दुनिया के उपर एक कटाक्ष है। श्री नागर मल यादव का 'माँ की वंदना' तथा शिवपाली खण्डेलवाल का 'प्लास्टिक एवं उसके दुष्प्रभाव' भी विशेषकर सराहनीय है।

हिंदी पत्रिका के बहुमुखी विकास एवं उत्तरोतर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

लेखापरीक्षा अधिकारी, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा, चण्डीगढ़

लेखापरीक्षा शब्दावली

Abrogate	निरस्त करना	Financial crisis	वित्तीय संकट
Affiliated	संबद्ध	Fluctuation	उतार चढ़ाव
Anticipatory	पूर्वानुमानित	Gradation list	पदक्रम सूची
Blue print	रूपरेखा, खाका	General procedure	सामान्य प्रक्रिया
Brain drain	प्रतिभा पलायन	Hierarchy	पदानुक्रम
Breach of rule	नियम भंग	Honorary member	मानद सदस्य
Citizen charter	नागरिकता अधिकार पत्र	Impose	अधिरोपित करना
Contempt of Court	न्यायालय की अवमानना	Imprest amount	अग्रदाय राशि
Demarcation	सीमांकन	Indemnity bond	क्षतिपूर्ति बंधपत्र
Dies non	अकार्य दिवस	Judicial custody	न्यायिक हिरासत
Ephemeral file	अल्पकालिक पंजी	Lack of integrity	सत्यनिष्ठा का अभाव
Eye-witness	चश्मदीद गवाह	Mandate	अधिदेश
Petty cash	खुदरा रोकड़	Security deposit	प्रतिभूति निक्षेप
Performance Audit	निष्पादन लेखापरीक्षा	Capital outlay	पूँजीगत परिव्यय
Recommendation	अनुशंसा	Subsidy	आर्थिक सहायता

अंग्रेजी पढ़ि के जदपि,
सब गुन होत प्रबीन ।
पै निज भाषा ज्ञान बिन,
रहत हीन के हीन ।

हे कृष्ण पुनः अवतार धरो

हे कृष्ण पुनः अवतार धरो
जग से अधर्म मिटाने को
जनजन को धर्म सिखाने को
अज्ञान का तम हरने को
ज्ञान प्रसारण करने को
अब पांचजन्य उद्घोष करो
हे कृष्ण पुनःअवतार धरो।।
शासक को नृप नीति सिखाने
अबला की लाज बचाने
शांति और सद्भाव बढ़ाने
मानवता का पाठ पढ़ाने
फिर से गीता पाठ करो
हे कृष्ण पुनः अवतार धरो।।
सृष्टि विनाश का पुरश्चरण
दुःशासन करते चीर हरण
द्रोपदी करती करुण पुकार
मच रहा सृष्टि में हाहाकार
अब दुष्टों का संहार करो
हे कृष्ण पुनः अवतार धरो।।
जनता है शोषित और वंचित
नेता करते अभिनय मंचित
मानव मानव में द्वेष भाव
शकुनि लगवाते गलत दाव
अब प्रेमभाव संचार करो
हे कृष्ण पुनः अवतार धरो।।
है युद्ध धर्म और अधर्म बीच
सब एक दूजे को रहे खींच
अर्जुन हो रहा कर्तव्यविमुख
है खड़ा हुआ वो समर सम्मुख
उसको अब सन्मार्ग करो
हे कृष्ण पुनः अवतार धरो।।

गांगेय देवव्रत हो रहे विवश
है पाप देखकर भी खामोश
धृतराष्ट्र पुत्रमोह में फँसे हुए
कौरव दुराचार में लगे हुए
अब पाप अ-नीति ख़त्म करो
हे कृष्ण पुनः अवतार धरो।।
नर भोग विलास में डूब रहा
कुदरत से वह खेल रहा
निर्बल पर होते अत्याचार
अबला की इज्जत तार तार
अब शारंग चाप संधान करो
हे कृष्ण पुनः अवतार धरो।।
दुनिया भ्रष्टाचार की मंडी है
पूरा साम्राज्य शिखंडी है
हर कोई है बेबस लाचार
बढ़ रहे जुल्म और अत्याचार
अब चक्र सुदर्शन हाथ धरो
हे कृष्ण पुनः अवतार धरो।।
भाई भाई में है शत्रु भाव
रिश्तों के हो रहे मोल भाव
नर अहंकार से भरा हुआ
दुनिया को छोटा समझ रहा
अब फिर से एक हुंकार भरो
हे कृष्ण पुनः अवतार धरो।।
बढ़ रहा सभी मे द्वेष भाव
मिट गया प्रेम और सद्भाव
वशीभूत है सभी स्वार्थ के
काम न करता है परमार्थ के
होठो पे मुरली आविष्ट करो
हे कृष्ण पुनः अवतार धरो।।

डॉ एन के सेठी
अतिथि रचनाकार

कार्यालय द्वारा आयोजित पश्चिमी क्षेत्र आई.ए. एण्ड ए.डी. फुटबाल प्रतियोगिता के मैच का दृश्य

पश्चिमी क्षेत्र आई.ए. एण्ड ए.डी. फुटबाल प्रतियोगिता-2020 में महालेखाकार कार्यालय राजस्थान, जयपुर की टीम के विजेता बनने की खुशी

पंजीयन संख्या: RAJHIN/2014/58890